

ध्यान
देन
योग्य
बात



1118

कोडूराम देवप्रकाश

निदेशक

कोट वन बोधनेर

१. प्रि-डे कृष्णम कारिगुरां हार
योग्य जाये है ।

२. परार्थ की तथा सामिक पुस्तक
प्रतिपत्त स बायी जाती है ।

३. प्रि-डे के समय सागान तथा
साधना पर प्रकाश होता है ।

४. प्रि-डे पर सागान प्रकाश आये है ।

• अरंभ •

कवीन्द्र केलि

अपर नाम

गहंली संग्रह प्रथम भाग

निर्माता

महा इमरलीय पुत्रपाद गणेशीश्वर सद्गुरु
श्रीमद् हरिसागरजी महाराज सादर के

दिष्य नाम

मुनि प्रवर कथीन्द्र सागर जी महाराज

प्रकाशक

• हरिसागर लीन पुस्तकालय •
लोहावट जागराम मारवाड ।

सुरसागर ज्ञान विडु न० २१

॥ श्रीसुखभागर भगवद् हरि पूज्य सदगुरुदभ्यो नम ॥

कवोन्द्र केलि

अपर गम

‡ गहूली सग्रह प्रथम भाग ‡

निर्माता —

॥ मुनि-प्रवर कवोन्द्र सागर जी महाराज ॥

मुद्रण-उच्य-दात्री —

श्रीमती कुञ्जी बाई

मालावाहा हीरानन्द की गली, देहली ।

ॐ

वीर सं० २४५७-वि० सं० ११८८ ।

मूल्य

पठन अनुशीलन ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गहूलियों गान की प्रथा प्राचीन काल से प्रचलित है, वर्तमान में व्याख्यान के मध्य में गाई जाती हैं। पूर्व कवियों की बनाई हुई गहूलियाँ वर्तमान में भी सम्ख्यातीत प्रसिद्ध विद्यमान हैं, उन में उस-उस समय के अनुकूल भाव-भाषा और तर्जें रही हुई हैं अतः गाने में कुछ कम अनुकूलता पड़ती है, उसी अनुकूलता का बढ़ाने के शुभहेतु से 'पूज्यपाद गणाधिेश्वर श्रीमान् हरिसागरजी महाराज साहब' के शिष्यरत्न 'मुनिमधर कवीन्द्रसागर जी महाराज ने गहूलियों को महात्माओं के गुण ग्राम के साथ शिक्षामय सदुपदेशों से भरपूर सरल मधुर नई तर्जों से हिन्दी भाषा में निर्माण कर के हमारी अभिलाषा पूर्ण की है। पराप काराय सर्तों विभूतय ।'

प्रस्तुत पुस्तक को 'श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय' द्वारा प्रकाशनार्थ देहली निवासी जौहरी सोहनलाल जी बहोरे की धर्मपत्नी श्रीमती कूजीबाई ने द्रव्य सहायता दे कर स्वपुत्री हीरोदेवी के स्मरणार्थ भेंट स्वरूप वित्तपूर्ण करवाई है। अतः धन्यवाद देता हूँ और उदारतामायों का तदनुसरणार्थ प्रेरणा करता हूँ।

परिचायक —

रतनगढ निवासी वैरागी तोलामल सीर्य

३ श्रामता हारादवा का साक्षर जावना ॐ

धर्म आराधितो येन, कृत कर्त्तव्य मात्मन ।

हिताय जीवित्त यस्य, किं मृत स न जीवति ॥

(कवोन्द्रफेलि)

स्थूल देह को छोड़ कर के मो धर्मो कर्त्तव्यशील सर्वहितैषिणी आत्माए पृथ्वीपट से छुस नहा होती, प्रत्युत वही प्रभाव सूक्ष्मकाय से जगत् में जमाये रखती हैं । वस ही श्रीमती हीरो देवी वि० स० १९६७ चैत वृ० प्रतिपदा के दिन अपन मोसाल वसई में देहली निवासी जौहरी लाल सोहनलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कूजावाई की कुत्ती स जाम लेकर, अपन वितृष्ट में सामायिक प्रतिक्रमणादि धम्मपथों का पठन तदनुशासन करती हुई, स्कूल की ७ वां फ्लासमें चारों इलमों में पास होती हुई विनय विवेक सदाचार-सुशील-शांति आदि गुणों से भरी हुए युवावस्था में कल्कत्ता निवासी श्रीयुत लाभचन्द्रजी भाडियेके साथ ब्याही गई थी । सुयोग्य गृहिणी पदको सुशोभित करती हुई नवपदकी ओली, अष्ट पद की ओली पंचमो तप, पचाणुमत आलोचना शशुञ्जयादि महातीर्थों की यात्रा इत्यादि अनेक धर्मश्रुत्यों को करती हुई दो महीने के विमलचन्द्र नामक बालक को अपना स्मरण चिन्हरूप छोड़ती हुई वि० स० १९८५ के आश्विन वृ० १४ के दिन १८ ह वर्ष की अल्पवय में समाधि से असार ससार को छोड़कर, सूक्ष्मकाय-यश कायसे अमरत्व को पाई श्रीमती का सादगी से, स्वामायिक शांति से भरा फोटू उपयुक्त विषय को साक्षी दे रहा है । प्रत्यक्ष विषये किं प्रमाणम् अत अलम् ।

जीवनी लक्षक—

रतनगढ़ निवासी वैरागी तोलामल सींघी

* समर्पणा *

घोरतपस्वी पूज्यपाद प्रातः स्मरणाय
श्रीमत् छगन सागरसद्गुरु का
सेवा में सादर

ज्ञानी महाध्यानी तपस्वी पूज्य गुरुवर आपका
स्वर्गीय दिन ही है स्मरणसाधक विनाशक पापका ।
इसमें सदा से तुच्छ में अत्युच्च भावों से भरा
कृतकैलि रसरैली समर्पण आप सेवा में धरा ॥

दया बुद्धि से देव ! स्वीकारें आशा यही ।
दर्शन दें स्वयमेव हृदय भावना में कही ॥

भवदीय दास्तानुदास—

विक्रमाब्द—१९८८

भाद्रशुक्ल ६

कवीन्द्र

ॐ श्री गुरुसागर मद्गुह्या नमः ॐ

॥ कवीन्द्र केलि ॥

ॐ अष्ट नाम ॥

। गहूली संग्रह प्रथम भाग ।

। श्री गौतम स्वामि गुण वर्णन गहूलो । १ ।

। राग—मायावरी ।

निय नमो दिगकारी रे पान ? गुरु गौतम जयकारी । टेंग ।
न्यधि निधान ज्ञानगुणादि, विज्र विनाशनकारी ।
गुरु अनुरागी परम विरागी, सुप्रतिजन गुणकारी र । चाना ?
मरल सुयुक्ति वाचन शक्ति, अद्भुत गुण अविकारी ।
निरमिमान विधान विनायक, शायक भाव विहारी र । रे० । २ ।
अदने केवल ज्ञान का देते, दान महा उपकारी ।
शिष्य हुय वे निश्चय करके, दोते शिवमग चारी र । चें० । ३ ।
गुरुसागर भगवान् मधु श्री, बटमान पगारी ।
वृषिबी नन्दन पन्दन करते, हार मादमहारि रे । चें० । ४ ।

श्रुतदेवी जाके मुख पङ्कज, खलत विविध प्रकारी ।
हरि कवीन्द्र नमो गुरु गौतम, वर्त्ते मङ्गलाचारी रे । चै० ५ ।

। श्री पूर्वाचार्य गुरु स्मरण गहूलो । २ ।

। राग—माढ ।

नमो शिरनामी गुरु गुणधामी, शासन के शिरताज । टेरे ।
पावन जीवन गौतम स्वामी, गणधर गुणमणिमाल ।
मात काल में नाम लिये ते, भक्ते मङ्गल माल । नमो० । १ ।
अन्तिम फेवलि जम्बूस्वामी, मुक्ति रमा वर कान्ता ।
मभव मधु मभृति श्रुतफेवली, देवें बोध नितान्त । नमो० । २ ।
महागिरि आदि दश पूरवी, भवचन माणाधार ।
देवर्द्धिगणि जिनभद्रादिक, आगम सग्रहकार । नमो० । ३ ।
श्रीसिद्धसेन हरिभद्रमधु, शासन धम्भ समान ।
ज्ञानी ध्याती पूर्ण तपस्वी, दिव्य अतिशयवान् । नमो० । ४ ।
नवाङ्ग वृत्तिकार हुण मधु, अभयदेव सूरी द ।
श्रीजिनवत्सलम मूरि किये थे, खडित पाखड वृन्द । नमो० । ५ ।
दादा श्रीजिनदत्त सुबाधक, आवक सब विशप ।
आज भी जाके पुण्य माप, भाग विन अशेष । नमो० । ६ ।

उनके पद परम्पर में हुए, गणि क्षमाकल्याण ।
 संवेगी गुर्विहित गीतारथ, करते स्य पर कल्याण । नमो०।७।
 यथा नाम गुणों के धारक, गणनायक अमिराम ।
 श्रीमुखसागर सदृशुरु स्वामी, दुखियोंके बिसराम । नमो०।८।
 भाग्यवान भगवान गुरु थे, भव वन सारथवाह ।
 दिव्य तपस्वी लगनसागरगुरु, हरे तिलोक का दाह । नमो०।९।
 गुरु गणनायक श्रीहरिसागर, समकित के दागार ।
 नवनिधि सुरतरु बौद्धित पुरण, आत्म के हितकार । नमो०।१०।
 गुरु पदसेवा अमृत मेवा, दे श्रानद अपार ।
 गुरु गुण कीर्तन दिव्य कवीन्द्रका है गाँति भाण्डार । नमो०।११।

। ज्ञान का खजाना गहूली । ३ ।

। राग—गङ्गल ।

गुरु जी ज्ञान का भारी, खजाना खूब खोले हैं ।
 नहीं है खूटने वाला जिसे लेना हो ले लेवें । टेर ।
 क्षणिक इस जिन्दगानीम, नहीं फिर हाथ आने का ।
 अमौला मान से परा जिसे लेना हो ले लेवें । १ ।
 समय पाकर अगर भूने, भवो भव दु ख होने का ।
 चिताया है उसीसे कि जिसे लेना हो ले लेवें । २ ।

हृदय भङ्गार में इसका जरा भी जो गया हिस्सा ।
 समजलो पार है बड़ा जिसे लेना हो ले लेवे । ३ ।
 उभय भव में हमेशा से, चलन चलता इसीका है ।
 समजमें आगया हो तो, जिसे लेना हो ले लेवे । ४ ।
 इसे जल चौर अग्नि या, किसी का भी न खतरा है ।
 सदा आनन्द देता है जिसे लेना हो ले लेवे । ५ ।
 खनाने के निकट में ही, भरा है दिव्य सुखसागर ।
 त्रिविध सन्ताप हरता है जिसे लेना हो ले लेवे । ६ ।
 वही भगवान है जिसके हृदयमें यह सजाना है ।
 स्वयं भगवान होने को जिसे लेना हो ले लेवे । ७ ।
 मुनिगणनाथ हरिसागर, गुरु हैं पूज्य उपकारी ।
 दया ला दान करते हैं जिसे लेना हो ले लेवे । ८ ।
 सुनो ससार भर में भी, न इसमें सार है कोई ।
 कबीन्द्रोंने इसे गाया जिसे लेना हो ले लेवे । ९ ।

। सद् गुरु सेवा फल गहूलो । ४ ।

। राग—मेरी गली गजारे सावरिया मेरा गली आजा
 धनु घरा जा महिरा खिवा जा रे सावरिया ।

सेवो गुरु परम कृपान भविष्य, सेवो गुरु परम कृपाल भविष्य
 ॥ टेर ॥

गुरु कृपा यकी जीव मुगति की
 बरे विजय वरमान भवियाँ । सेवो० । १ ।
 हृदय तिमिरभर करे नाग गुरुवर
 काटें मोह की जाल भवियों । सेवो० । २ ।
 सद्गुरु सेवा मीठा मेवा
 देवे नित्य रसान भवियाँ । सेवो । ३ ।
 सद्गुरु शरणे शुद्ध आचरण
 रहते जाय जजान भवियाँ । सेवा० । ४ ।
 जनम मरण जाव कीरति कवीट गावे
 सद्गुरु सेवो त्रिकाल भवियाँ । सेवा । ५ ।

। सद्गुरु महिमा गहूली । ५ ।

। राग—पद्मा प्यारो रे कि मोहन गारा रे ।

सखियाँ गावोर काँइ गावो गुरुगुणमान सखियों गावोरे । टेर,
 चउगति चहुटे बीचमें, काँइ जीव अनादिकाल । सखियाँ । १ ।
 गुरुगमको पाये बिना काँइ बहोग फिरा घेहान । सखियाँ । २ ।
 रागट्टे प ठगिये जहाँकाँइ रहें विद्याकर जाल । सखियाँ । ३ ।
 लूटलिया धन मालको काँइ बना दिया कगाल । सखियों । ४ ।
 मोह महा अन्धेरमें, काँइ भूला स्व पर विप्रेक । सखियाँ । ५ ।

परबश पामर जीवन, काँड पाये दु ख अनेक । सखियाँ । ६।
 शुभ पुण्यादय जीवक काँड आज मिलेगुरुराज । सखियाँ । ७।
 भारग दशक मोक्षके, काँड सुप्रतिजन सिखाज । सखियाँ । ८।
 आलस बिकथा छोड़के, काँड होकर उद्यमवत्त । सखियाँ । ९।
 योग शुद्धिको धारके काँड सेवा गुरु निभ्रन्ति । सखियाँ । १०।
 पसर गुरुमुख भँवत, काँड स्यादवाद् रस रेल । सखियाँ । ११।
 आज उसी रसरेल से काँड पाप ताप दें टेल । सखियाँ । १२।
 स्वारयमय ससार म, काँड परमारथ का पन्थ । सखियाँ । १३।
 सुखद सरल अय होगया काँड सेवत गुरुनिग्रन्थ । सखियाँ । १४।
 गुरुमुखसागर विश्वमें काँड हैं भीगुरु भगवान् । सखियाँ । १५।
 भीहरिसागर पूज्यहै, काँड गगुनायक गगुवान् । सखियाँ । १६।
 गुरुदर्शन कौनन कियौ काँड आत्मनिर्मलहोय । सखियाँ । १७।
 हैं कौन्टसद्गुरुबिना, काँड अशरणशरणाकीय । सखियाँ । १८।

। सद्गुरु उपदेश महिमा गहूली । ६ ।

। राग—लाल रयाल देख तरे अचारज मन आय ।

भैरवी

सद्गुरु उपदेश देत भविक बोध पावें ।

भविक बोध पावे सखी । भविक बोध पावे । डेर ।

भटका भव बनमें जीव जनम मरण पावे ।

सुगुरु चरण शरण अजर अमरता निपावे । सद्० ।१।

लोह भी सुवर्ग वर्ग पारस सद्ग आत्र ।

शिष्य सुगुरु होय यदि सुगुरु सद्ग जावे । सद्० ।२।

सुगुरु रोध-मान माया लोभ को भगाव ।

रविप्रकाश तिमिर नाश शीघ्र ज्यों दिखावे । सद्० ।३।

अग्नि सघन घन पटा का पवन ज्यों नशावे ।

सुगुरु कुमति कुगति कुटिलता को त्यों हटावे । सद्० ।४।

सिंधु लहर बहतु है ज्यों चन्द्र उदय भाव ।

सुगुरु मुमति सुगति सरलता को त्यों बढ़ावे । सद्० ।५।

सुगुरु निकट विकट पन्थ सहज ही लखावे ।

विनय विमल वृत्त वर विवेक प्रकट पावे । सद्० ।६।

सुगुरु पाप ताप दुःख दूर ही गमावे ।

सुखनिधि भगवान रूप आप होइ जावे । सद्० ।७।

परम धरम धीर वीर भावना सुभावे ।

सुगुरु पूज्य हरि हमारे गुण कवीन्द्र गावे । सद्० ।८।



। सद्गुरुगुण माहात्म्य गहूली । ७ ।

राग—दूढ़ फिरा जग सारा जग सारा जग सारा
सिधगिरि सानी ना मिला ।

पुण्य उदय गुरु पाया गुरु पाया गुरु पाया करो वन्दना । टेरा
सद्गुरु वन्दन पाप निकन्दन, विषुध हृदय सुखदायक नन्दन
भवद्व ताप विनाशन चन्दन वादत सखी सुखपाया सुखपाया
सुख पाया करो वन्दना । १ ।

सद्गुरु सेवा करण मे देवा, धरे होय सबरु नित नर देवा ।
पावे थातम अनुभव मेवा हरे सखी मोह माया मोह माया
मोह माया करो वन्दना । २ ।

सद्गुरु चरणा यशरणशरणा प्रबलकरम थरिदलकामरणा ।
थाधि व्याधि उपाधि हरणा, सबो सखी हो अमाया हो अमाया
हो अमाया करो वन्दना । ३ ।

सद्गुरु सङ्गे परम उमगे सहज समाधि सरस तरंगे ।
रहत मदा ही भाव निसगे मखी निज रूप निपाया निपाया
निपाया करा व दना । ४ ।

सद्गुरु साचा निर्मल बाचा मोहराय को मारे तमाचा ।
पुद्गल धन्धन होवत काचा सखी बहिरात्म हठाया हठाया
हठाया करो वन्दना । ५ ।

सद्गुरु पूरण ब्रह्मको कारण, अन्तर आत्म भाव मचारण ।
भवादिदु खको दूर निवारण कर सखीशा त मुझाया मुझाया-
मुझाया करो वन्दना । ६ ।

सद्गुरुमुखोदधिभगवान्च्छ्रद्धिसिद्धि, धरेदिगपगन्धनहृदनवनिधि
भव्यजनोकावोवतशिखविधि, वही सखी मेर मनभाया मनभाया
मनभाया करो वन्दना । ७ ।

सद्गुरु ज्ञानी सेवा प्रानो आत्म निर्मल कारण मानो ।
॥ हरि पूज्य मुगुह गुणखानी, दिव्यकवीन्द्र गुणगाथा गुणगाथा
गुणगाथा करो वन्दना । ८ ।

। सद्गुरु प्रार्थना गहूली । ८ ।

। गग—मरे राम अयाध्या घुलालो मुफ ।

गुरु ज्ञानकी बातमुनायाफरे हमें समझि रत्न का दान करें । १० ।

मूल बिन साया कहीं होती हुई देवी नहीं

सम्यक्त्व बिन त्यों धम करणी भी सफल होती नहीं ।

कहो है न वही हम कैसे कर । गु० । ११ ।

माया लगी चारों तरफ कृद्रगम हमें पड़ती नहा,

मिथ्यात्व की छाया हृदयस यों छिटकीही नहीं,

उसे कैसे कहो अब दूर करे । गु० । १२ ।

साधन नहीं तैयार साधक साध्य कैसे पा सके,
 नैया न है नावीक तब क्या सिन्धु जलको तिर सके
 कैसे साध्य कहो अब प्राप्त करें । गु० १३।

क्रोधों भवोंमें भी नहीं हम पूर्ण बदला दे सके ।
 उपकार हागा आपका वर्गान न जिसका होसके ।
 ऐसे आप गुरु उपकार करे । गु० १४।

कामधेनु वत्पट्टम चिन्तामणि भी तुच्छ है,
 पालिया गर एक जो सम्यक्तब अच्छा स्वच्छ है ।
 यही आप उपाय बताया कर । गु० १५।

ससार सागर पतित जन उद्धारकर्ता आप हैं,
 सच्चे द्वितीपी हैं हमारे आप ही माँ बाप हैं ।
 कभी साधन अब हम दिनमें धरे, । गु० १६।

दु खदर्ता आप सुखसागर गुरु भगवान् हैं,
 ज्ञान गुण भण्डार सच्चे आप हम अज्ञान हैं ।
 निज रूप हमें भी बनाया करें । गु० १७।

तत्त्व की थडा सुमिश्रया हस्ति भेदन में हरि
 सागरों से भी बड़ी दोबे हृदय में विस्तररी ।
 तब दिव्य कबीन्द्र सुवीर्ति करें । गु० १८।

। कर्त्तव्य सदुपदेश गृह्यते । ६ ।

। राग—जिन धर्म का डंका आत्मममे बज्जवा दिया धार जिनेश्वरने ।

दुःखहर सुखकर भविर्जीवोंको शुभवोध दिया श्रीगुरुवरने ।

आचार विचार सुधार करा शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । १८

अज्ञान दशामें पड़े हुए जब आत्म भान ही भूले थे ।

तब उदय दिशा के सूर्यरूप, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । १९

न्यायापार्जित धनसे अपना निर्वाह करा जा सुख पाहा ।

धन माप्ति विघ्न जय हो बैसा शुभवोध दिया श्रीगुरुवरने । २०

‘यायी’ जीवन जीने वाले ही उभय लोक सुखमय हाते ।

अन्याय कभी न करा एसा शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । २१

द्रव्य भेद और काल भाव की नाडी कैसे चलती है ।

उसका अति शुद्ध सरलतासे शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । २२

आदर्ग बनो आदर्श बनो कर्त्तव्य करा अपने जा हा ।

निज शुद्धि सगठन सिद्ध करो, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । २३

हैनै न धर्म का मूल तत्त्व जो स्याद्वाद उमको जानो ।

कितना विशाल है वह देखा, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । २४

श्रीमुखसागर भगवान् गुरु, हरिसागर सम गुणधाम बनो ।

यों दिव्य कवीन्द्रोंसे बगित, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने । २५



। कर्त्तव्योपदेश गृह्य लो १० ।

राग—शुद्ध सुन्दर अति मनोहर घाल घन्त्रमानसम् ।

कर्त्तव्यता उपदेश पाकर भुजना नहीं चाहिये ।
 कर्त्तव्य ही आदर्श है आदर्श जीवन के लिये । ४२ ।
 परमात्मा की पूज्य पूजा नियम करनी चाहिये ।
 विगड़ी हुई निज आत्मा का शुद्ध करने के लिये । कर्त्तव्य ० ११ ।
 ज्ञानदाता मद्गुरुस साथ, पाता चाहिये ।
 निज अविद्या अधना को दूर करनेके लिये । कर्त्तव्य ० १२ ।
 माणियोंमें मम अनुसम्भा उदानी चाहिये ।
 विनयान्मभ और निर्भय रूप होने के लिये । कर्त्तव्य ० १३ ।
 पाकर गुणार्थोंका सदा शुभदान देना चाहिये ।
 चादतके साथ रालिन वस्तु पानेके लिये । कर्त्तव्य ० १४ ।
 सद्गुणी जनके गुरुओं में, राग रगना चाहिये ।
 तत्र दुर्लभ दिव्य मद्गुण मन्त पानेके लिये । कर्त्तव्य ० १५ ।
 आगम श्रवण चित्तन मननमें ला लगानी चाहिये ।
 हितश्रुति कथा तत्त्व है, उनका समझनेके लिये । कर्त्तव्य ० १६ ।
 है मनुज भव टूटके फल, ये सभी मर्त्यक्षमें ।
 शांत मुखसागर जनित अमृत परम रस के लिये । कर्त्तव्य ० १७ ।

उपदेश हरिसागर गुरु के नित्य धारण कीजिय ।
निच यशोगाथा कबी-त्रोंसे गवानेने लिये । कर्त्तव्य० । २१ ।

। संहर्म वृक्षरक्षणोपायोपदेश गृह ली । ११ ।

। राग— शुद्ध सुन्दर मति मनोहर याल वादमातरम ।

श्रीगुरु सत्सङ्ग में सद ज्ञान अमृत पाजिये ।

विश्व पावन धर्म के उपदेश का मुन लीजिये ।
वर्मरूपी वृक्ष क शुभ, बीज वानेके लिये ।

आम भूमिका विशोभन, खुर ही कर दीजिय । श्रीगुरु० । १ ।
जा विरोधी तत्व है, उन की परीक्षा करे ।

धीर हो तद्बीर से फिर, नाश उनका कीजिय । श्रीगुरु० । २ ।
हैं कल्पित भावरूपों, कीट काटे पड़ को ।

गाति पूर्वक यत्न करके, दूर उनको कीजिय । श्रीगुरु० । ३ ।
निश्चल बना निच इन्द्रियों को, नित्य रक्षा क लिये ।

दिव्य तर दृढ चित्त वृत्ति, बाढ़ फँला दीजिये । श्रीगुरु० । ४ ।
सींचकर निमेल दया जल, द्रव्य भावें सर्वथा ।

यों यथोचित धर्म के रू, टूट लहरा दीजिये । श्रीगुरु० । ५ ।
नर सुरामुरनाथ मुख सब, जानला ये फूल है ।

मान सुख फलरूप हैं, मत्स्यकर चख लाजिये । श्रीगुरु० । ६ ।

अथय अन्त-न अपार गत्व, मागर मरुट दोगा सही ।
 न स्वय भगवान् इा करन, परम सुय लीजिये । श्रीगुरु-
 पूज्य हास्मागर गुरु मुरीन्द्र काजिये हे मियो ।
 धम का मचा तराका प्राप्त उनस काजिये । श्रीगुरु० ॥२॥

। अहिंसा धर्मोपदेश महत्तो । १२ ।

। गुरु—गद्गामु मूढ बाल ।

परम परम का मूल अहिंसा ताव दृश्य में धारो र ।

श्रीगुरु द उपदेश नदिजन आप विचारो रे ।

रि दिल में धारो र । १ ।

पाँचो इन्द्रिय मन-नच-नाया, बल है तीन प्रकारा रे ।

ज्यासो-न्दबाम आयु मिलि दशधा माग मचारो र ।

कि आप विचारो रे । १ ।

मागों को धार सा मागों बीन सभी रहलाये र ।

माण वियोग हूण से होगा, मृत्यु भजगें आवर ।

कि आप विचारो रे । २ ।

जैसे अनुभव माव दु ख का, निज आत्म का होव रे ।

वैसे ही सब माणीमात्र को, सुख दु ख होवर ।

कि आप विचारो र । ३ ।

जीवन सब ही को प्यारा है है सब मुख के कामी रे । ३ ।

जीवन हर दु खदे मत हाना, दुर्गति गामी रे ।

कि आप विचारो रे । ४ ।

मपना जन्म मरण नहीं चाहें, वे पर को क्यों देवे रे ।

मार्ग नहीं चाहें उसके क्यों, कारण सेवे रे ।

कि आप विचारो रे । ५ ।

केसी जीव को किसी तराँ से, कष्ट कभी नहा देना रे ।

द्रव्य भाव से नित्य अहिंसा, हो ज्यों रहेना रे ।

कि आप विचारो रे । ६ ।

ह्रोँदय से दु खी जीव को, देख हृदय भर लाना रे ।

जुन दु खों को दूर हटाने, शक्ति लगाना रे ।

कि आप विचारो रे । ७ ।

ग्रन्था लूना और अपाहिज, भूत्रा प्यासा होवे रे ।

उसकी रक्षा करना इसमें, द्रव्य अहिंसा होवे रे ।

कि आप विचारो रे । ८ ।

शाम धर्म से पतित जीव को, उस ही म थिरकरना रे ।

शिव अहिंसा यही इसे कर, भव जन्म तिरना रे ।

कि आप विचारो रे । ९ ।

गौहरिसागर गुरु गणनायक भाव टया भगटावे रे ।

देव्य कवीन्द्र उन्हीं की निर्मल कीरति गावे रे ।

कि आप विचारो रे । १० ।

। निज घर पर घर स्वरूप गृह ली । १३ ।

राग—जिन धर्मका हका मालूम बजया दिया थीं जिनश्वरने
 परपरक मेमका न्यागासभी, अपने घरका कुछ ख्याल करा ।
 गुरुराज सुनाते हैं वाय यही सुख से अपने घरमें विचरो टैरा
 पर घरमें नो नर जाते हैं वं पराधीन बन जाते हैं ।
 पद पद टुरुराये जाते हैं, ऐस दु खका कैसे बिसरो । पर०१७
 पर घरमें जा सुख दीख रहा, है अन्त उसी में दु ख महा ।
 ज्ञानी पुरुषोंन भदलदा बुद्ध ज्ञान दृष्टिस देखा करा । पर०२०
 जाना नरका में फिर है भला, पर परघर तो है वूरी बला ।
 जाने पर जाय नहीं निकला, उस पड़े वहाँपर सड़ा करो । पर०२३
 परघर धारण की टट्टी है, भँताप भरी यह भट्टी है ।
 आखीर में ता वह मिट्टी है, वहाँ जा क्यों जीवन खवार करो ।
 पर घरमें भूग विलास कर आन वालों का दास करे ।
 बेहोस बना सर्वस्य हरे उनसे अत्र पाँड जुहाया करो । पर०२५
 निज घरमें है स्वाधीनपना, जिसमें सच्चा सुख है इतना ।
 कि है जिससे सुर सुर सुपना अब उससुरतका उपयोग करो ।
 निज घरमे दो सुखसागर है निज घरमें ही भगवान रहें ।
 निज घरकी बात को कौन कहें, ताते उसके पर्य को पकरो । ७

हरिसागर गुरु गणनायकक, उपदेश मदीप को लेकरके ।
 मारगटेखा अपनवरके, तब दिव्यबचीट सुकीर्ति करो ।पर०।८।

। सद्गुरु वन्दन गहूली । १४ ।

राग—पया कहुँ कथन मैं मरा नाथ क्या कहुँ कथनमैं मेरा ।

भाव से वन्दन मेरा नाथ, भाव से वन्दन मेरा ।

काटो भव दु ख फेरा नाथ, भावसे व दन मेरा । डेर ।

घारक सद्गुरु चरण कमलमें, कीना आज वसेरा ।

मानत हूँ श्व मैं पाया, भववन अन्तिम छरा नाथ ।भाव०।१।

ससार कारागारम छाया, मोह निबिड अधरा ।

सद्गुरु सूरज आज मिले तब, मकटा पुण्य सपेरा नाथ ।भाव०।२।

कान अनादि आशम धनका लूट करम लूटेरा ।

सबलसुभटगुरुचरनशरनते, मिटगया आज विखरा नाथ ।भाव०।३।

अन्धकारका वाच्य गुणद है, रूपद वाच्य उजेरा ।

अन्धकारका नाशक तारो, गुरुपद अर्थ सुहेरा नाथ । भावसे०।४।

सद्गुरु बोध सुधा का प्याना, पीवा होत अडेरा ।

तत्त्व अन्धकारका होजा है, अपने आप निबेरा नाथ ।भावस०।५।

कपट रहित जो हो रहता है, सुखद सुगुरु पद चेरा ।
 सुखसागर भगवान् रहे बद्ध, शिवरमणीसे घेरा नाय । भाव०६।
 श्रीहरिपूज्य सुगुरु सेवामें, नित नित बन्दन मेरा ।
 धन्य कवीन्द्र वही नर है जो, होत गुरुका पूजेग नाय । भाव०७।

। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्याणिमोक्षमार्ग

गृहीती । १५ ।

। राग—माढ ।

है जिनवाणी, गुरु गुणखाणी निरुपम सुख दातार ।

हे भविष्याणि! निजहितजानी, देखो तत्त्व विचार । टेर ।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण हैं, जिन वाणी का सार ।

उनका ही उपदेश करें गुरु, मुन होना भव पार । हैजिन० ।१।

ये तीनों ही रत्न अमोलक पूरण सत्य स्वरूप ।

पाता है सो हो जाता है, जिभुवन का भी भूप । हैजिन० ।२।

बाहिरके जितने हैं भूषण, दूषण से भरपूर ।

रवि शशि से भी बढ़कर ये तों, मकटाते हैं नूर । हैजिन० ।३।

नरभवमें निज वीरज योगे, मकटावे सो धन्य ।

परमात्म पद पा सुख योग, सहज समाधि जन्य । हैजिन० ।४।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण की पूरण भासि बही ।
 हे ससार असार उसी में केवल सार सही । हैजिन० १५।
 इन्ही तीनों के धारक ही है सुखसागर लयलीन ।
 वे ही है भगवान् उन्हीके मुक्तिरमा स्वाधीन । हैजिन० १६।
 श्रीहरिसागर गुरु गणनायक, के उपदेश यही ।
 सन्मय जीवन में है कीरति, दिव्य कवी ट्ट कही । हैजिन० १७।

। समकित लक्षण गहू ली । १६ ।

राग—हो प्रातम जी प्रीत की रीति अनित्य तजी
 चित्त धारिये ।

सुन हे बहेनी ? गुरुवर दें उपदेश हृदय में पारना ।

उससे जगमें फिर अपना उत्तम जीवन निर्धारना । टे०।

नव तत्त्वों की पहिचान करो उनमें निश्चल श्रद्धान धरो ।

समकित गुणठाणे म विचरो । सुन हे बहेनी ? १।

समकित ही सार सदा जानो, उससे ही धर्म क्रिया ठानो ।

ता विन मत धर्म सफल मानो । सुन हे बहेनी ? २।

समकित के लक्षण पाँच कहे, अपराधी पर भी न काय बहे ।

उपशम समता मे नित्य रहे । सुन हे बहेनी ? ३।

- नर सुर सुख हैं सब दु खभरे, अक्षयसुख मोक्षकी चाह करे ।
 सवेग यही दिल बीच धरे । सुन हे बहेनी ? १४।
- ससार को कारावास लखे, तासों निर्वेद सदैव रखे ।
 धर्माभूत रस को नित्य चखे । सुन हे बहेनी ? १५।
- लख दीन हीन दुखिये प्रानी, उनकी अनुकम्पा दिल ठानी ।
 करे रक्षा नित निज हित जानी । सुन हे बहेनी ? १६।
- जिन कथिन वचन सबही सच हैं, मिथ्या मतिका जहाँ लेश न है ।
 आस्तिकतामें यों रग रहे । सुन हे बहेनी ? १७।
- समकित सुखसागर का तट है पहाँचे लय होते सङ्गत है ।
 भगवान वहाँ मिलते भट है । सुन हे बहेनी ? १८।
- गुरुहरिसागर गणनायक है, सुखकर शुभ समकित दायक है ।
 देते हैं बोध जो लायक हैं । सुन हे बहेनी ? १९।
- जिनने गुरु सुरतरु पाये हैं समकित बौद्धित फल खाये हैं ।
 वे ही कवी-द्र मन भाये हैं । सुन हे बहेनी ? २०।

। समकित दूषण परिहारोपदेशगह्वली ।

राग—मेरे राम ज्योध्या गुलालो मुझे ।

निर्मल समकित का ऐसे तू धार सखी,
 पच दूषण दूर निवार सखी । टेर ।

बीरसगी के विमल सिद्धान्त में शङ्का कभी ।

करना नहीं बस मानना हम श्रद्धा क्या जानें सभी ।

गुरुगम का तू पाके विचार सखी । निर्मल० ।१।

मूढम श्रद्धों से भरे सिद्धान्त हैं स सार में ।

फिर शक्ति हम जैसे करें उनके सभी निर्धार में ।

उनस जोड़ तू बुद्धि के तार सखी । निर्मल० ।२।

ज्ञानावरणी कर्म का क्षय हो सभी प्रायण में ।

सद्रूप होगा ज्ञान भी बस सर्वथा उस पक्षमें ।

सातें तू न चपलता धार सखी । निर्मल० ।३।

कौशा कुमल की बाँधना है राग द्वेष जहाँ भरे ।

हो रागद्वेषाधीन ही स सारमें जनमें भरे ।

ऐसी कौशा को चिन्त से टार सखी । निर्मल० ।४।

है विचिकित्सा यही की धर्मफल है कि नहीं ।

इसका हृदयसे दूर कर मुन धर्मफल हैं ही सही ।

सातें धर्म में भाव सुधार सखी । निर्मल० ।५।

मिथ्यान्विगुण की भी मशरसा भूलकर करनी नहीं ।

है बिप मिला जो दूध वह क्या प्राण को हरगा नहीं ।

सातें ऐसी मशरसा विचार सखी । निर्मल० ।६।

मिथ्यात्व जन की सद्गति को दूर ही से त्यागना ।

जिससे लगे सम्यक्त्व की शुभ वासना को दागना ।

निज सद्गति शुद्ध स्वीकार सखी । निर्मल० । ७।

पूर्णता को पा लिया उनके लिये अपवाद है ।

वे जो करें करते रहे वे सर्वथा आजाद है ।

हममें न है वैसा विचार सखी । निर्मल० । ८।

श्रुति दिव्य सुखसागर महा भगवान हरिमागर गुरु ।

उपदेश देते हैं यही इसमें प्रमाद मा कुरु ।

यही साधु कवी श्रौं का सार सखी । निर्मल० । ९।

। श्रावक धर्मोपदेश गहूली । १८ ।

राग—महावीर तुम्हारी मोहन मूरति देखी मन ललचाय० ।

उपदेशें सुगुरुधर्म उभय भव भय का नाश करे । टेरे ।

दुर्गति पढतांकां रक्षे, सुगति को फिर जो बक्षे ।

वह धर्म कहा निष्पक्षे, जिसमें दो है भेद परे । उपदेशें० । १।

गृहि यतिषों ने सुखकारा, वह देश सरव से धारा ।

होते गृहस्थ के आचारा, जिनका वर्णन यहाँ कर । उपदेशें० । २।

जीवादिक् तत्त्व विचारें, निज श्रद्धा को निर्धारें ।

नित बर्ते भार्गविसार, समकित दर्शन शुद्ध धरे । उपदेशें० । ३।

ब्रह्म निरापराधी प्राणी, की सेच्छा न करे हानी ।
 निज शक्तिको पहिचानी, स्थूल अहिसक भाव धरे, उपदेशे० ४।
 इत्यादिक बारह व्रतको, पाले भरे सुकृता को ।
 सेवे श्रमणोंके पदको पचम गुणत्राणे विचरे । उपदेशे० ५।
 वत्कृष्ट भावके धारी, वारम देवलोक विहारी ।
 क्रमसे होवे शिव सचारी, आत्मिक अक्षय सौख्यवरे । उपदेशे० ६।
 सुखसागर श्रीभगवाना, गुरु हरिसागर गुणवाना ।
 उपदेश करे चित्तलाना, वर्णन दिव्य कवीन्द्र करे । उपदेशे० ७।

। बारह व्रतकी गहूली । १६ ।

। राग—धनासिरा ।

बारह व्रत ये जान सखीरी ? बारह व्रत ये जान ।

धारत होत कहयान । सखीरी । टेर ।

जान बूझकर विन अपराधे, प्राणातिपान न ठान । सखी०।

कन्या गो-क्षे त्रादि विषयमें, त्याग अनीक विधान । सखी०।१।

राजनियमसे दण्डित है वह, छोड़ अदत्तादान । सखी० ।

इह परलोक विदम्बन हेतु, तज मथुनसे तान । सखी० ।२।

निज धन धान्यादि परिग्रहका, कर लेना परिमाण । सखी० ।
 दशों दिशामें जानि अनेक नियममें रख ध्यान । सखी० । ३।
 भोगोपभोग प्रमाण में निश्चिन्त, हो रहना सावधान । सखी० ।
 पापोपदेश प्रचार न करना, अनर्थ दृढ प्रधान । सखी० । ४।
 दो घटि राग द्वेष विना करो, मामाधिक मन्धान । सखी० ।
 दिग् द्रव्य छूटें निषमित करना, देशावकाशिक मान । सखी० । ५।
 पूर्व तिथिमें पाँपघ पुष्टि उपवास पूर्वक जान । सखी० ।
 अनिधि स विभाग बढी जा दियासपात्र में दान । सखी० । ६ ।
 पचाणुवत हैं तीन गुणवत, चउगीसा पहिचान । सखी० ।
 सब मिले होते श्रावक के ये, बारह वृत मुमदान । सखी० । ७।
 समकित पूर्वक आराधन कर, पहुँचे अमर विमान । सखी० ।
 प्रभसे मुखसागर का पाकर, होते हैं भगवान । सखी० । ८।
 श्रीहरिसागर गुरु गणनायक देवे सबत दान ।
 दिव्य कवीन्द्र बताराधकें करते कीर्ति गान । सखी० । ९।

। गुरुविनय गहूली । ०० ।

। राग—झानादिक गुण सपदारे तुज अनत अपार ।

सुनाव दे सखी ? हितशीक्षा श्रीगुरुराज ।

आत्म परिणत जो करें सखी पावें अविचलराज । टेरा

मूल कहा जिनधर्मका सखी, विनय जिनेश्वर देव ।

मकटें विनयी जीवको सखी, सद्गुणगण स्वयमेव । सुना ०

अभ्यन्तर सप भेद है सखी, विनय सदा सुखकार ।
 कर्म सयन वन दाहमें सखी, श्रद्धा रूप तुषार । सुनावें०१२।
 नामात्मिक निक्षेपसे सखी, विनयक चार प्रकार ।
 भाव विनय के धारते सखी होत है बड़ा पार । सुनावें० १३।
 उत्तराध्ययन सुसूत्रमें सखी, मथमाध्ययन विशेष ।
 विनय स्वरूप विचारते सखी न रह लेश क्लेश । सुनावें०१४।
 मन बच काया घुट्टि से सखी, गुरु आज्ञा अनुकूल ।
 आचरणा को धारते सखी, शूल बने सब फूल । सुनावें०१५।
 गुरु ईर्ष्या निन्दा कर सखी बचवि उतपात ।
 ऐसे अविनयी आत्मा सखी, खावें जम की लात । सुनावें०१६।
 जो हैं विनयो आत्मा सखी रहते निरभिमान ।
 सुखसागरभगवान ये सखी, त्रिभुवन तिनक समान । सुनावें०१७।
 श्रीहरिपूज्य सुगुरु मिलें सखी, करना विनय अपार ।
 दिव्यकवीन्द्र सभी करे सखी निर्मल कीर्तिमचार । सुनावें०१८।

। तामस — समतोपदेश गृहलो । २१ ।

राग—धन हो श्रुपभवेय भगवान युगला धम निशरज वाले ।
 सुनलो सुनलो गुरुउपदेश जो निज घोर अविद्या टाले । टेरा

हैं उलट वरण दु खखान, दें सुलट वरण शिवदान ।
 तामस समताको लो मान दोनों के है पन्य निराले । सुनलो ०११ ।
 हैं उलट सुलट दो व्यक्ति, गुण बाधक साधक शक्ति ।
 क्रमसे बन्धन और मुक्ति के हैं ये देने वाले । सुनलो ० १२ ।
 हैं उलट सुलट दो चाले, सुगति कुगति से बचालें ।
 हैं मारी भद्र विचालें, माने सारे मठावाले । सुनलो ० १३ ।
 हैं उलट सुलट दो चक्र, लेते जो इनसे टक्कर ।
 वे लख चौरासी चक्र के खाने न खाने वाले । सुनलो ० १४ ।
 हैं उलटवरण गुणघाती तामस है मोह का नाती ।
 शोता है नाना भाँती, त्यागें शिव जाने वाले । सुनलो ० १५ ।
 जिन सुलट वरण को जाना व सुखसागर भगवाना ।
 पावें निज द्रव्य खजाना, हरि पूज्य विशद गुणवाने । सुन ॥ ६ ॥
 हैं सुलट वरण जयकारी, समता सुव्रतिजन प्यारी ।
 करें कीर्ति कवीन्द्र अपारी, पर पार न पान वाले । सुनलो ० १७ ।

। भाव स्तव गहू लो ॥ २२ ॥

राग—माह—कहो सब जय ० श्री महावीर

नमोरे नमो श्रीगुरु गुण भण्डार ॥ टेरे ॥

भाव स्तव के पावन पदका, अरथ दिखावन हार ।

वीतरागगुण बोध विधायक, निजगुण निर्मलकार । नमोरे ० ११ ॥

धमण पेश्वर्यादिक पूरण त्रिभुवन जनया गर ।
 श्रीमहावीर जिनेश्वर स्वामी आदिकर श्वतार । नमारे० । १० ।
 तार्किकर सहसम्बुद्धात्मा पुरुषोत्तम सुखकार ।
 पुरुषसिंह मवर पुण्डरीक गण्डहस्ति गुणधार । नमारे० । ११ ।
 लोकोत्तमवर लोचनाथ नित्त योग क्षेम करतार ।
 यथावस्थित वस्तु मवाशक लोक मदीपाकार । नमारे० । १२ ।
 भावि भाव विभासन समरथ केवल ज्ञान मचार ।
 लोक मयोनिक भयहर श्रमपद, चक्षु श्रुतदातार । नमारे० । १३ ।
 सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणमय, मार्ग देशकसार ।
 शरणागत प्रतिपानक सुखकर, श्रद्धभुत रक्षाकार । नमारे० । १४ ।
 श्रुत चारित्र धरम उपदेशक धरम सारथि मनुहार ।
 गुण सम्पन्न विप्रेषण बाले वीर मधु ज्ञयकार । नमारे० । १५ ।
 श्रीजिनगुण निज आत्म के गुण दोनों हैं इकसार ।
 पर विमाय परिणतिके कारण अन्तर पडा अपार । नमारे० । १६ ।
 परपरिणतित्त निचपरिणतिभज गुरुउपदेशविचार ।
 कान लब्धि परिपाक ह्रुपसे होवेगा निस्तार । नमारे० । १७ ।
 श्री भगवती जी मूत्र विषयमें, यों भापें गुणधार ।
 श्रीहरि पूज्य गुरु मति वों होत कवान्त्रोद्धार । नमारे० । १८ ।

पर्याप्ति स्वरूप गृहणी । ०३ ।

। राग आशावरा । अषधु नो जोगी गुरु मेरा ।

भाव बढों बार हजारो श्रीगुरुवर उपकारी रे भावें० । ८।
 आत्म तत्व परम हितकारीः सत्य स्वरूप दिखाया ।
 कर्मजनित पर्याय विचार अटभुग बाध निपायार । भाव० ।
 निज आधार शरीरादिक की, पर्याप्ति छद् पावे ।
 कर्मोदय से कैसे आत्म, श्रीगुरुराज बतावरे । भाव० । २।
 निज उत्पत्ति स्थानक पदमा, जीव लहे आधार ।
 ताको खल रस रूप करे बह, पर्याप्ति आधारारे । भावें० । ३।
 जिस शक्ति से रसकी परिणति सात धातु बन जावे ।
 शरीर पर्याप्ति कहते जासों जीव शरीर बनाव रे । भावें । ४।
 जात हाता इन्द्रिय म्पे, धातुन का परिणाम ।
 इन्द्रिय पर्यापति ये जाना, करण पर्याप्ति समामरे । भावें । ५।
 ग्वासोद्वास तथा भाषा मन याग्य सुपुद्गल दलले ।
 तत्तद्रूप परिणत जासों, छाड़ आत्मबन लर । भावें । ६।
 उस उस नाम हैं पर्याप्ति, जीव शक्तियाँ जानों ।
 शरीकर पर्यापति मरते, लब्धि पर्यापता मानोरे । भावें० । ७।
 चउ एकेन्द्रिय विकल असन्धी के पर्यापति पच ।
 छद् सन्धी पचेन्द्रियके यों, हैं पर्यापति मपचरे । भावें० । ८।

अमय मात्र आहार पर्याप्ति, अन्तर मूहरण पच ।

नेत्रनिज शक्ति पूरण करते जगमें नर तियचर । भावे ० । ७९

इसे आत्म निज गुणमें जो सारी शक्ति लगावे ।

गौरिपूज्य विगद गुण उनके, दिव्यकवीन्द्र मुगावेरे । भावे ० । १०१

श्रीमहावीर समवसरन गहूलो । २४ ।

जिल्ले को दशो ।

त्रिभुवन तारक वीरजी जग उपकारीर जयकारी जिनराज ।

त्रिभुवन तारक वीरजी जग उपकारीरे मुजाण । ८ ।

चउद सहस शुध साधु महाया धारीर द्वािकारी महाराज ।।

स यम साधक साधवी छतिस हजारिरे मुजाण । १ ।

विद्यमान जिन शासन उज्ज्वलकारीरे अनगारी सिरताज ।

रामु आझा के पालक उग्र विहारीर मुजाण । २ ।

गामानुगाम विचरता पावनकारीरे श्रधदारी शिवसाज ।

रायगृह नगर सुगुणसिल चैत्यमभकारीर मुजाण । ३ ।

विरचे समवसरन योजन विस्तारी रे सुखकारी मुरराज ।

बउमुखतोरण दढ धजा मनुहारी रे मुजाण । ४ ।

एतसिहासन पूरव दिशि, सुखकारीरे गुणधारी जिनराज ।।

भारह परिपद् को उपदेगे भारीरे मुजाण । ५ ।

चतुरङ्गी निज सेना को सिणगारीरे नहिं पारी नरराज ।
 श्रेणिक बन्द सविनय भाव सुधारी रे सुजाण । ६ ।
 करे मुक्ताफल सायियो मद्गलाचारीरे गुणधारी धनगाज ।
 गावें चिल्लादिक पटराणी सुन्दरी सारीरे सुजाण । ७ ।
 समकित सुव्रतको लहे शिवकारीरे नरनारी समाज ।
 आतमगुण उजवाले बोध विचारी रे सुजाण । ८ ।
 जिनवाणी भवसागरमें निस्तारीरे दुखहारी घरपाज ।
 पाकर परिपद निकसी दिशि अनुसारीरे सुजाण । ९ ।
 श्रीहरिपूज्य प्रभुतणी बलिहारीरे जयकारी महाराज ।
 दिव्य कवीन्द्रे कीरति नित्य उचारीरे सुजाण । १० ।

श्रीगौतमस्वामीकी गृह ली । २५ ।

सीता माता की गोदीमें हनुमत डारी मूढ़डी इस रागमें ।

बन्दो वीर विभु के शिष्य प्रथम गण धार कोरे ।
 पञ्चविध सद्य सुनायक इन्द्र भूति अणगार को । टर ।
 जिनका गौतमगोत्र पवित्र ।
 जगमें जो आदर्श चरित्र ॥

घार मात हाय शरीर उच्च विस्तार को रे । बन्दो०।१।

जिनका ममचौरम सदान ।

पूरुष लक्षण परम प्रधान ॥

शरे अद्भुतरूप अनूप मवर आकारको रे । वन्दो० ।२।

जिनका वज्र ऋषभ नाराच ।

सहनन अस्थि सघ निकाच ॥

र लहें कोई भी सुरनर जिनके बल पार को र । वन्दो० ।३।

जिनका वर्ष सुवर्ण समान ।

दर्शन दे आनन्द महान ॥

रते विश्व हृदयमें अनहृद मेम मचार को रे । वन्दो० ।४।

जिनका उग्र तपोमय जीवन ।

करत शासन की परभावन ॥

भव मय हस्ते धरते प्रतिदिन शुद्धाचार का रे । वन्दो० ।५।

मात काल में जिनका नाम ।

जपते हरदा विघ्न तमाम ॥

रते मगलकारी नित्य महादय सार को रे । वन्दो० ।६।

श्री हरिपूज्य गुरु गुणवान ।

गाँव स्वामी का शुभध्यान ॥

रत पाये दिव्य कवीन्द्र भवोदधि पारकोरे । वन्दो० ।७।



श्री गौतम स्वामी जी की गृहीती । २६ ।

रावणन शक्ति मारी हरके तान तान तान इस रागमें ।

सेवो मेम धरीन गौतम गुरु गणधार धार धार ।

जानों तीन भुवनमें सद्गुरु सेवा नार नार सार । १ ।

जो करम गहन बन भारी के दहन समर्थनकारी ।

देदीप्यमान तपधारी, वदो वार वार वार । सेवा० । १ ।

तप तपकर कर्म तपावे, निज आत्म को यों तावे ।

पापों क अछूत बनावे, जो इकनार तार तार । सेवा० । २ ।

आश सा दोष महारी, भीरुजन को भयकारी ।

सर्वोच्च कोटि सचारी तप आधार धार धार । सेवा० । ३ ।

जो परीपहादिक दुश्मन, नाशन म ई निर्दयमन ।

आत्म निरपेक्षी वर्तन धाराचार चार चार । सेवा० । ४ ।

जो घोर गुणों की धारे तप धार मद्दा विस्तार ।

अतिघोर ब्रह्म व्रत सारे, भोग विसार सार सार । सेवा० ।

सस्कार विहीन शरीरा, सक्षिप्त विपुन गम्भीरा ।

तेजो लेश्या गुण हीरा, अपरम्पार पार पार । सेवा० । ६ ।

चउदस पूरवी चउज्ञानी सर्वाक्षर योग विधानी ।

अध्याक्षर पून वाणी है श्रीरार कार कार । सेवा० । ७ ।

नाति निकटे अति दूरे, सविनय शुभ ध्यान मनूरे ।
 प्रभुवार चरण चित धूरे, नित अनगार गार गार । सेवो०।८।
 वत्तदुःखागनने धारी, नियमित दृष्टि विस्तारी ।
 सम्यग्ग्यान मुक्तोड विहारी तज ससार सार सार । सवा०।९।
 श्री हरि पूज्य गुरु गौतम हैं, सेवत हरते अवतम हैं ।
 फिर ता दिव्य कवीन्द्र सुगम हैं, बेड़ा पार पार पार । सेवो०।१०।

श्रीगौतम स्वामि जी की गहूली । ७७ ।

मय दित प्रभु की याद में भाविल ना हो जरा इस राग में ।

श्रीगौतम तत्त्व विचारणामें भाव यों धरा । टर ।

दृष्ट श्रद्धा हैं जिनहों का, तत्त्वों क मति ।

फेरमी छादस्थिक भाव में, सशयता है भरा । श्रीगौतम०।१।

'चनमाण चलिये' सूत्र में जो अर्थ है रहा ।

उसमें हैं कान विचार विषयिक सशय दिलजरा । श्रीगौतम०।२।

नौतुइल भा जिनको हुआ है वैस यों सही ।

श्रीवीर प्रभु निज ज्ञान सेती निश्चय है करा । श्रीगौतम०।३।

इहिले न थी श्रद्धा वही उत्पन्न है हुई ।

त्पन्न श्रद्धा भाव जिनके है हुआ हरा । श्रीगौतम०।४।

जान श्रद्धा में तथा उपन श्रद्धा में ।

हैं कार्य कारण रूप भारी भेद तो भरा । श्रीगौ०।५।

थडा गसप कौतुहल वाले गौतम स्वामी ने ।

श्रीवीर प्रभुके पासमें जा प्रश्न यों करा । श्रीगौ०।६।

श्रीहरि पूज्य प्रभु तग जीवन पावन घाणी से ।

सुकवीन्द्र बद्धित गौतम स्वामी शसप को दरा । श्रीगौ०।७।

सद्गुरु त्राध प्याला गहूंली । ०८ ।

। दाडिया रम के राग में ।

पीलो न प्रम धरी र सुभवियां, पीला न प्रम धरी ।

सद्गुरु त्राध सुधा का प्याला, पीलोने प्रेम धरी० । १० ।

अजर अमर पद पावो नियमस जानों न जुड जरी ।

र सुभवियां पीलोने । ११ ।

लोक अनोक के त्रिविध स्वरूप को, देखो प्रत्यक्ष करी ।

र सुभवियां पीलोने० । १२ ।

हृदय नयन निज निमल द्वारे घोरौधकार टरी ।

र सुभवियां पीलोने० । १३ ।

सार सागर दु खों का आकर, जट्टी से नाच्यो तरी ।

रे सुभवरियाँ पी लोन० ।१।

५ महा भय मैयवटा बह, जाये सभी खिखरी ।

रे सुभवरियाँ पी लोन० ।५।

रहद आत्म शक्ति समपे, ताप अमाप हरी ।

रे सुभवरियाँ पी लोन० ।६।

७ मस्य शीघ्र चोध न भूलो, गतकाल न आवे फरी ।

रे सुभवरियाँ पी लोने० ।७।

८ भगवान हरि पूज्य गुरु सेवो, वाणी क्वीन्द्र उचरी ।

रे सुभवरियाँ पी लान० ।८।

प्राणी प्रबोध गहूली । ०६ ।

। राग—माद ।

१ १ मुनले गुरु उपदेश प्राणी मुनल गुरु उपदग ।

२ २ वाणी सुधाका लेश हरे काल करान कनेग । प्राणी० । २ ।

३ ३ मोध मद लोभ मान हर्ष अ तर शत्रु छह ।

४ ४ करके निग्रह करते, पटक नीचा रह ।

। कव तू चेतगा अर कह । प्राणी० । १ ।

काम कहा वह जो होता है, विषयों से सम्बन्ध
त्याग अरे तू शीघ्र उस अर, क्यों करता प्रतिबन्ध ।

फोकट होगा है तू अथ । माणी० । २ ।

अन्तर आत्म सदगुणदाहक, अद्भुत अग्नि रूप ।
निज पर को दानिकर होता, दृबो द भर रूप ।

ऐसा है रे प्राध स्वरूप । माणी० । ३ ।

श्रीरों के गुणको क्यों निन्द ईर्ष्या से सानन्द ।
मदगद सन्निपात रिरा तू क्यों करता आक्रन्द ।

कब तू त्यागेगो यह पद । माणी० । ४ ।

कुग्रह रूप परिग्रह उसका योग्य सदा है त्याग ।
राग धरे तू त्याग करे नहीं, लोभ समुद्र अयाग ।

अब तौ चेत अरे महा भाग माणी० । ५ ।

जात्यादिक जो आठ मकारे, निज गुण रोधक दुष्ट ।
मान महागिरि है उसपे चढ़ क्यों सहता है कष्ट ।

गिरकर आखीर होगा नष्ट माणी ० । ६ ।

भव वर्द्धक साधन कों साथे, विषय कपाय अनेक ।
उनहीं में तू हर्ष मनावे भूला आत्म विवेक ।

ऐसी क्या है तेरी टेक । माणी० । ७ ।

सुख मागर भगवान् सदा हरि सागर गुण गम्भीर ।
 चरया शरण को दिव्य कवीन्द्रो, धारो हाकर धीर ।
 जिससे पद्वशोगे भवतीर । प्राणी० । ८ ।

सद्गुरु सगति गहू लो । ३० ।

। पयाडा म'दशो के जे मारापोर न० इस राग मे ।

सद्गुरु सग समकिल रह मुहावना ।

अह लग तय राग दू प होय नाग जो ।

अनुपम आाम ज्याति मकूट श्री कट

माया वाली रहे न पर की आश जा । स०१ ।

बाल अनादि पुद्गल सगी आतमा

गुरु गम बिन तज निज घर परपर भटकाजो ।

जनम मरणके दुस्सह दुख को भोगता

विविध गतिमें बेप धरा नि नटका जो । स०२ ।

आर्यदश आरजकून श्री जिन धर्म को

माप्ति हुई है अथ कर्तव्य हमारे जो ।

आसद्गुरु आधीन हुए सब सीखले

माया शक्य विहीन वृत्तिमे धारें जो । स०३ ।

स्थूल अणुव्रत गुण व्रत शीक्षा व्रत धरे

क्रमसे जिनकी बारह सँख्या हाये जो ।

सुव्रत धार विधि पूर्वक गुरु पास में

देशविरति पचम गुणठाणे रहेवेंजो । स०४

परमगुरु प्रभु गीतगण महावीर के

उपासकोंग मे बारह व्रत के धारी जो ।

निरतिचार जीवन प्रतिमा धारी हुए

आनदादिक श्रावक जाउ बलिहारी जो । स०

सद्गुरु तारे तिरें स्वयं भवसिंधु से

कर करावे सदा क्रिया निष्पाप जो ।

सम्यक् तत्व निरूपक साधु धर्मके

नीन रहें नित हरे जीव सताप जो । स०६

सुखसागर भगवान् गुरु हरि पूज्य हैं

परम महादय पथ के सारथु वाह जो ।

पक्षपात विरहित हितकारक लोक के

दिव्य कवीन्द्र सुवर्णित वचन प्रवाह जो । स०

चौमासी व्याख्यान गृहीती । ३१ ।

। राग—पनिहारी ।

मङ्गलमय दिन आजका सुन साहेली,
 आरम्भ वर्षाकाल साहेली ।
 दर्शन श्रीगुरु मेघ के सुन साहेली,
 करके हों सुग हान साहेली । ४ ।
 पाप ताप ऋतु नाश से सुन साहली,
 फैला शान्ति समीर साहली ।
 दुष्ट रजा राशि मिठी सुन साहेली,
 पाकर बोग सुनीर साहेली । १ ।
 धर्मलता लहरा गई सुन साहेली,
 भविजन हृदयोद्यान साहेली ।
 भववनथाके जीवका सुन साहेली,
 है आराम महान साहेली । २ ।
 मोह महोदधिशोप को सुन साहेली,
 पाया आप ही आप साहेली ।
 सामायिक समता नदी सुन साहेली
 हरे सभी सताप साहेली । ३ ।

- आवश्यक आत्म क्रिया सुन साहेली,
 खेती सुन्दर रूप साहेली ।
- मव्य जीव ग्वत्त रचें सुन साहेली,
 मकटे धान्य अनूप साहेली । १ ।
- पाँपध पाँधे धर्म के सुन साहेली,
 दैत है फल फूल साहेली ।
- नर सुर शिव मुग्ध रस भरे सुन साहेली,
 सहज समाधि मूल साहेली । ५ ।
- प्रभु पूजा की नाव से सुन साहेली,
 सुखसागर के बीच साहेली ।
- लीला में लयलीन हो सुन साहेली,
 हर करम मल कीच साहेली । ६ ।
- श्रीहरि सागर सद्गुरु सुन साहेली
 है शुभ मेघ समान साहेली ।
- दिव्यकवीन्द्र सुकीर्ति की सुन साहेली,
 यों नित छडें तान साहेली । ७ ।
-

चौमासी व्याख्यान ग्रहूली । ३० ।

। राग—नाग जीकी । मटहार ।

चौमासी हित देशनारे वारी, धारत चिच

धारत चिच उत्नास । भव भय भीरु मव्यके रे,
भव भय भीरु मव्य क र वारी । तोडत है भव

तोडत है भव पाम । चौमासी हित देशनारे । १ ।

प्राणम गुणघाती सभीरे वारी, बहुसावद्य

बहुसावद्य व्यापार । करना ही नहीं चाहियेरे ।

करना ही नहीं चाहियेरे वारी, जीव दया दील

जीव दया दील धार । चौमासी हित देशनारे । २ ।

लगुन आदिक मास में र वारी तिल धान्यादिक-

तिल धान्यादिक सार । स ग्रहना नहा चाहिये रे ।

३ ग्रहना नहीं चाहिये रे वारी । जीवोत्पत्ति

जीवोत्पत्ति विचार । चौमासी हित देशनारे । ३ ।

प्रमदय वात्रीसों तथा र वारी । अन्नन्त काय

अन्नन्त काय बचीस । खाना कभी नहीं चाहियेरे ।

खाना कभी नहीं चाहियेरे वारी । मानो विसवा

मानो विसवा बीस । चौमासी हित देशनारे । ४ ।

अन्न जानै फल को सदा रे वारी । पत्र शाक विन
 पत्र शाक विन शोध । विगड़े आटा घी विप रे ।
 विगड़े आटा घी विपरे वारी । मॉस दौप अवि
 मॉस दाप अविरोध । चौमासी हित देशनारे । ५ ।
 इच्छारोधन भावसे रे वारी बहुविध तप वि
 बहुविध तप विस्तार । भवदवताप निवारणारे,
 भवदवताप निवारणारे वारी । शक्ति सहित चित
 शक्ति सहित चितधार । चौमासी हित देशनारे । ६ ।
 श्रीहरि पूज्य कृपा थकीरे वारी समकित निर्मल
 समकित निर्मल सार । दिव्य कवीन्द्र लह वहीरे ।
 दिव्य कवीन्द्र लहें वहीरे वारी । अज्ञय सुख भ
 अज्ञय सुख भण्डार । चौमासी हित देशनारे । ७ ।

सामायिक गहूलो । ३३ ।

। अय दिल प्रभु की याद मे नाफिल ना हो जरा । इम तर्ज में ।
 सामायिक धारी श्रावक साधु तुल्य हो रहें । टर ।
 हैं निन्दक वन्दक एक से और मान तथा अपमान ।
 तस थावर प्राणी मात्रमें समभाव जो रहें । सामायिक० । १ ।

ससार जहेरी दृक्षक अकूर जादा है ।

उन राग द्रुपका ताड़के ब्रानादिक लाभ नह । सामायिक०।२।

सामायिक समयिक आदि है सामायिक आठ प्रकार ।

उनका धारें व जीव अरन दुख का दहें । सामायिक० ।३।

भाव अदिसक सन्यवाणा पाप रहित आचार ।

थाइ अक्षरमें कर्म नाशक वाय का बहें सामायिक० ४ ।

तान पदों में याम एसी द्वादशगी है ।

मुनकर अनुशीलन सबथा अजरामर भाव गह । सामायिक०।५।

जो वस्तु मात्र का जानके, हयोंका त्याग कर ।

मुनरा सायन में परीपहा को मम से सहें । सामायिक०।६।

हरि पूज्य प्रभु आदश से सामायिक नित्य करें ।

वसदिव्य कवीन्द्र यशोगाथा उनकीहा सत्य कह । सामायिक०।७।

। चौमासी व्याख्यान गहूलो । ३४ ।

। राग भाशावरो सिद्ध चक्र पद वदा ।

चौमासी चित्त धार रे भविका, धर्म विशय विचार । दर १०

पठ आवश्यक औषध अनुपम, उभय काल लो धार ।
 जिनवर वर धन्य तरी भाषित भय गद टानन हार । रे भवि०१
 अपुनर् वधकयोगसे कीना आवश्यक विस्तार ।
 बहुत पाप रजका हरता है द सुख अपरम्पार । रे भवि०२
 तज आहार शरीर की सेवा गृह व्यापार कुशील ।
 पवदिवस में पाँपध करके, मोह भूत दो खीन । रे भवि०३
 द्रव्य भाग शुचि मति दिन करना, जिन पठ पूजा सार ।
 आत्म पूज्यपणों तव मकट, पूजक का निर्धार । रे भवि०४
 इन्द्रिय मनसा समय करक, तज दा विषय विकार ।
 अल्पचर्य आदर्श वही है अक्षय गुण आधार । रे भवि०५
 अभयदान सुपात्र तथैव च, मुक्ति विशयक मून ।
 अनुरूपादिक दान जगतमें नरसुर सुख अनुकूल । रे भवि०६
 इच्छारोधन तप को धारो, वाद्य अभ्यन्तर भाव ।
 कर्म निकाचितभी जरी जावे, लब्धि सिद्धि गुण दाव । रे भवि०७
 निन्दा दुर्गाति की महतारी कर निज दिल से दूर ।
 निज दुष्कृत की निन्दा करना, मरुटे आत्म नूर । रे भवि०८
 श्रीहरि पूज्य जिनेश्वर शासन, दुर्लभ पाया आज ।
 दिव्य कवीन्द्र सुकीर्तितसेवो, पावो अविचल राज । रे भवि०९

चौमासो व्याख्यान गहूली । ३५ ।

। राग गुजराती रामडा पद्धति ।

।।ना भाव घरीने जइये आवू भयवार० इस नर्ज में ।

।।विर्षा भाव मद् गुरु धार हृदय में धारनार ।

।।या अनुपम अवसर चौमास का आज ।

।।व धर्म विग्रह मकारे मधिक समाज ।

।।नी अपनी करत का दुष्कृत आलोचनारे । टर ।

।।सावी) आवक का समारमें, लगते हैं अविचार ।

आचारों का सेरत, गण चौबीस मकार ।

।।मेध्या दुष्कृत॥ उनका देत याग सुधारनारे । सखि० १ ।

।।सावी) समझि पूर्वक है कह आरक क प्रत नार ।

अप्रमाद परिणाम से, गज करके अतिचार ।

।।साधन से क्रम से सुर गिव सुख विस्तारनार । सखि० २ ।

।।सावी) आत्म गुण शोधक सदा, पष्ट निमित्त भमान ।

शुद्ध दव गुरु धर्म की सेवा करो सुमान ।

।।बा पेरा दती है अनुपम म्बीकारनारे । सखि० ३ ।

।।सावी) बीतराग के मार्ग में, नहीं राग अरुदेष ।

तात उपगम भाव में, वर्तन करो हमेश ॥
 है यह पावन जैन धरम का मम विचारनारे । सखि० १।
 (साखी) श्रीहरिपूज्य जिनश क सुन आदेश विधान ।
 विधिपूर्वक पानन का पावो पद कथान ।
 ताते दिव्य कवीन्द्र करे कीरति निर्धारना रे । सखि० ५।



अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३७ ।

। हो जिनराज महारा नैया पार लगायो महाराज इम राग में ।
 है धन भाग सेवा पर्व पजूसन आये सुखकार । टेर ।
 (साखी) अष्ट करम वारक भही, परम धरम गुणधाम ।
 अक्षय सुख दातार भव्य जीव विसराम ॥
 हो मुर राज जाय द्वीप नदीश्वर भक्ति चिन्धार । है जन० १।
 (साखी) शाश्वत जिन मन्त्रि वहाँ वावनगिरि पर सार ।
 मति मंदिर जिन रित्र है शा चउवीम उदार ।
 हो, आठ दिवस करते उन्सव जिन पूजा हिनकार । धन० २।
 (साखी) एसे ही उम पर्व में, आयक राज परमाद ।
 उत्सव पर्वक आठ दिन, धर्म करा आवाद ॥

॥ गुरुराज करते धर्मबोध मुन पानो निजाचार । है धन० ॥ ३१

(साखी) सामायिक निन पूजना, करते तपो विधान ।

आश्रव और कषाय का, रोंको दुग्मन मान ।

ने निग देना दान अभय बहुभय मय जीवों को अपार । है ध० ॥ ४१

(साखी) श्रीहरिसागर सद्गुरु, टें दृष्टान्त रसाल ।

उपदेश करते रदा, वरते मद्गल वार ॥

॥ निर्भय बोलने दिव्य कवीन्द्र, जयकार । है धन० ॥ ५१



अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३७ ।

इस जाण मारासाके मनका एता मन को तनको लगन को जा

। कुण जाणो मारासाके मन को इस राग मे ।

खी पर्व पजसन सेवो, एतो सेज्यों पावन मेशर । मखी० ०८१ ।

आश्रव कारण मव त्यागो घन मोह निंद से जागोरे । सखी०

ह मिष्ट वचन वा धनदे, आरभ तजाया मनदेर । सखी० ॥ ११

नों से यदि छुड़ाना, जीवा को अमारि पनानार । सखी०

मत भेदि छेदि कदा वाणी, कहे वाणी हितगुणखाणारे । म
 परधन पत्यर सम माना विपरूपविषय सब जानार । सखी
 वृष्णा अति दूर निवारो सताप मदा चित धारार । सखी०३
 मीति का प्राय हटाव, सुविनय को मान घटावेरें । सखी०४
 मैत्री का माया मार, सब गुण का लोभ मटागरे । सखी०५
 समता मयम सुख धारा, दुर्ध्यान हृदय से टारो रे । सखी०
 लख खडी कनक नित्यानी, ना इक सामायिक सानीरे । सखी
 आत्मगुण पुष्टि बिगायि, करो पाँपध पुण्य कमाई रे । सखी
 पाँपध सामान्य दिहीना, द्रव्य पूजा करो मवीणार । सखी०६
 त्रिक शुद्धि तीन अवस्था जाना पूजा की व्यवस्थारे । सखी०
 जिन दर्शन दुरित विनाश, बन्दन मनवाँछित वासेर । सखी०७
 जिन पूजन श्रीसत्र पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखी०
 जिन पढिमाजिनसमजाणो उपकार विगप प्रमाणारे । सखी०८
 जिन पढिमा दर्शन सारा, बोधत है आर्ट कुमारारे । सखी०
 पढिमा-श्रुत पचम आरे, भविजन के काज सुधाररे । सखी०९
 सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी०
 हरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीर । सखी०१०

अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३८ ।

नर दख तू निश्च जाइ जगमे नहां तरा कोइ इत्त गग म ।
 भवि पुण्योदय फल पावे, महापव पजूसन ध्यार । टेर ।
 बन धर्म विषय विमतागे, परमाद हृदयसे टारा ।
 समक्ति मुव्रत गुण धारो, भव भवने दु ख शमावे । भवि०१।
 कुन दश अनारजवासी श्रीमार्द्रकुमार विनासा ।
 सयम दित शक्ति विकासी, जिनप्रतिमाके परभावं । भवि०२।
 भागावलि कर्म खपावे, सयम में चित्त लगावे ।
 रागादिक भाव गमावे, करुणारस रेल चलावे । भवि०३।
 निज अनुचरगण प्रतिवाधे, तापसहिंसा प्रतिशोधे ।
 गोशानक मत प्रतिरोधे मधु घोरशरण शिव जावे । भवि०४।
 जिनप्रतिमा दर्शन भाव, आत्म गुण निर्मल दावे ।
 परमानम भाव निपाव, निज आगम ग्रन्थ बतावे । भवि०५।
 माणान्त कष्ट श्राने पर भी तपो नियम अति दृढ़तर ।
 छाड़ो नही निश्चल होकर, घन घाति कर्म हटावे । भवि०६।
 ज्यो देवी परीक्षा होती, त्यो बढती है निज ज्योति ।
 शिव रमणी समुख होती, है जगमें कीरति छावे । भवि०७।
 श्रीसूर्ययशा भूपाला, निज नियम अखडित पाला ।
 सुरगावे गुण मणि मान्ता, दृष्टांगुरु दिखनावे । भवि०८।

मत भेदि छदि कहा बाणी, कहा बाणी हितगुणखाणीरे । सखी ०
 परधन पत्थर सम मानो, विपरूप विषय सब जानोर । सखी ०
 लुप्याश्रमि दूर निवारो सगाप सदा चित धारार । सखी ०
 मीति को क्रोध हटाव, सुविनय को मान घटावेरे । सखी ०
 मैत्री को माया मारे, सब गुण का लाभ सहारेरे । सखी ०
 समता समय सुख धारा, दुर्ध्यान हृदय से टारा रे । सखी ०
 लख खडी कनक नितदानी, ना इक सामायिक सानीरे । सखी ०
 आत्मगुण पुष्टि विशयि, करो पौषध पुण्य कमाई रे । सखी ०
 पौषध सामर्थ्य विहीना, द्रव्य पूजा करो प्रवीणारे । सखी ०
 त्रिक शुद्धि तीन अवस्था जाना पूजा की व्यवस्थारे । सखी ०
 जिन दर्शन दुरित विनाश, पन्दन मनबोद्धित वासेरे । सखी ०
 जिन पूजन श्रीसब पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखी ०
 जिन पढिमाजिनसमजाणा उपकार विशेष प्रमाणारे । सखी ०
 जिन पढिमा दर्शन सारा, बोधत है आर्ट कुमारारे । सखी ०
 पढिमा श्रुत पचम आरे, भविजन के काज सुधारारे । सखी ०
 सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी ०
 हरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीरे । सखी ०

अष्टाहिका व्याख्यान गह्वली । ३८ ।

नर इत् नू निश्च जोइ जगम नह। तंरा फोइ इत् नग में ।

भवि पुण्यादय फल पावें, महापव पज्जन व्यात्र । टर ।

बल धम विषय विस्तारा, परमाइ हृदयसे टारा ।

समक्ति सुत्रत गुण धारा, भव भवइ दु त्र गमावे । भवि०१।

कुन देश अनारजवासी श्रीश्राट्टुमार विनामो ।

सयम हिा शक्ति विकासी, जिनप्रतिमाके परभारे । भवि०२।

भागावलि कर्म सपावे, सयम में चित्त लगाव ।

रागादिक भाव गमाव, करुणारस रन चलावे । भवि०३।

निज अनुचरगण प्रतिपाध, तापसहिंसा प्रतिगोधे ।

गागालक मत मतिरोधे मधु वीरशरण शिव जावे । भवि०४।

जिनप्रतिमा दर्शन भाव, आत्म गुण निर्मन टावे ।

परमात्म भाव निपाव, निज आगम ग्रन्थ बतावे । भवि०५।

भाणान्ध कष्ट आने पर भी तपा नियम अति दृढतर ।

छात्रों नही निश्चल होकर, घन घाति कर्म हटावे । भवि०६।

ज्यों देवी परीक्षा होगी, त्यों बढ़ती है निज ज्योति ।

शिर रमणी समुख होती, है जगमें कीरति छावे । भवि०७।

श्रीसूर्ययज्ञ भूपाना, निज नियम अर्बुदित पाला ।

सुरगावे गुण मणि माना, दर्शितशुरु दिखनावे । भवि०८।

श्रीहरिसागर गुरराया, उपदेशे वीथ सवाया ।
है दिव्य कवीन्द्रन गाया, धार गतिचार मिटावे । भवि०।

दीवाली व्याख्यान प्रारभ गहूंलो । ३६

कशरिया घासू प्राति लगारे साचा भाधसू इन राग मे

धन आज सुनेगे पर्व दीवाली अधिकार को । टेर ।
उज्जयिनीपति सपति पूछे, आर्य सुइस्ती स्वामी ।
स्वामी जानें आप मुझे क्या, गुरु कहें तू नामीरे । धन०१।
विशेष पूछे श्रुत उपयोग, कहें गुरु तब जाना ।
मादक हितमुनिवेश धार मर, हुआ तू चप गुणवानारे धन०२।
बदन कर सपति तय बोले, गुरु मताप है मारी ।
मुझ गरीब को राज दिया यह, जाउ तुम बलिदारी रे । धन०३।
राज को लीजें उच्छृण कीजें राजा विनति उचारे ।
तन मूर्धा भी नाहै क्या ल, गुरुयों कह कर वारेरे । धन०४।
पुण्य मिली सम्पत्ति है यह, ताते पुण्य बढावो ।
धर्म करो नित पर्वदिनों मे, आतमशक्ति जगावोगे । धन०५।
सम्पति पूछे लौकिक लोको १ वर पर्व दिवाली ।
मक्ता कइसे ० १ भासुलगेरे धन०६।

[बाणी गुरु उपदेशों वीर चरित विन्मारी ।
 वन गर्भहरण जन्मादिक, छद्म कल्याणक भारीरे । धन०७।
 ३ गमन कल्याणक समय, मक्का पर्व दीवाली ।
 ही का अधिकार सुनो श्रु, श्रवधारो इकगारी र । धन०८।
 गि पृथ्वी गुरु गण नायक, चरण शरण चित धारी ।
 निन पाव अनुपम कीरति, दिव्य कवीन्द्र उचारीर । धन०९।

दीवालो व्याख्यान पुण्यपाल स्वप्नफल गहूली । ४० ।

मेखरे उतारा राजा भरथरो इस राग मे ।

। समय निज जान के कर्म स्वपावन हेतु ।
 । महर देवें देशना वीर विभू जग केतु ।
 वीर वचन हित कर नमो । टर ।
 । पान राता वहाँ चन्दन विधि निरधार ।
 । मयङ्कर स्वप्न का, भावि फन पृष्ठे सार । वीर० १।
 । जीरणशाल मे, गन रहते आसक्त ।
 सुन्दरशाना थकी, रहते पूर्ण विरक्त । वीर० २।
 । शारे माणिया, गृहन्था प्रमधारी ।
 । मय रमे रत गहें, दीशा ल न अनारी । वीर० ३।

बन्दर देखा चपलता, करता हूँथा अपार ।
 होंगे ज्ञानादर विना, साधु मिथिलाचार । वीर० १।
 क्षीर वृक्ष कण्टक धिरा दखा मय्यन मभार ।
 गुणरागी श्रावक विरे कण्टक निर्गा विचार । वीर० ५।
 काग कुचष्टा कर रहा उसका फल मुनि मानी ।
 शुभ स्वगण राज कुगणमें जाव गे हित जानी । वीर० ६।
 सिंह मरा पर भय कर ऐसे जिनमत होगा ।
 कमल उकरडी पर लगा धर्म नीच कुल यागा । वीर० ७।
 बीज बोये उपर खत में, देगे कुपान में दान ।
 कनक कलश मलसे भरा, सुत्रत पूजा न मान । वीर० ८।
 हरि पूज्य मधु से सुना, दुखमय भावी काल ।
 पंचमहाव्रत धारी हो, शिव जावें पुण्यपाल । वीर० ९।
 धन्य दिवस धन्य वे घड़ी, परतिख मधु उपदेश ।
 दिव्य कवीन्द्र सुनकर भरी त्यागें राग रुद्रैप । वीर १०।



दीवाली व्याख्यान चन्द्रगुप्त स्वप्नफल

गहूली । ११ ।

। सलूणा की तर्ज ।

- प्रमथान श्रुतकेवलीरे भद्रवाहू गण धार सलूणा ।
 शान्नापुर समोसरेरे, बटु साधु परिवार सलूणा । १ ।
 चद्रगुप्ता राजा वहाँ रे, श्रावक धर्म सुजाण सलूणा ।
 शालिक नप सम श्रीगुरुरे, वन्देकर बहुमान सलूणा । २ ।
 दृष्ट चतुर्दश स्वप्न थेरे, पौषव पिद्धलीरात सलूणा ।
 मनके फल पृछे कहें रे, गुरु निर्मल श्रवदा सलूणा । ३ ।
 गुरु एक शाखा टूटतेरे दीक्षा नहीं ले भूप सलूणा ।
 मय अकालमें आयमारै, केवल ज्ञान विलूप सलूणा । ४ ।
 चन्द्रलखा शन छिद्रसेरे, धर्म में पथ अनेक सलूणा ।
 भूगों को दखा नाचतेरे, कुमनि उच्छृङ्खल छेक सलूणा । ५ ।
 साना साँप धारह फणारे, वारह वर्ष दकाल सलूणा ।
 त्वे विमान आकर गिरारे नहीं जघादिक चान सलूणा । ६ ।
 कचरीनी भूमि पद्मसेरे, धर्म बखिक कुल धार सलूणा ।
 खनुष्य चमका विश्वमें, मिथ्यामत सनकार सलूणा । ७ ।
 सुख सरसे धर्म की रे कट्याणक थल हाण सलूणा ।
 वनक याल कुत्ता भखेरे लक्ष्मी नीच भगान सलूणा । ८ ।

बन्दर हाथीपे चढारे, दुर्जन निरय विशोक । सलूणा ।
 सागर मर्यादा तजेर नीति राजा लाक । सलूणा । ९ ।
 जगी रथ बद्धके जुते रे सयम लेवे बाल सलूणा ।
 ज्यांति हीन सुरत्नसेरे साधु करे कुचाल । सलूणा । १० ।
 नृप बालक बेलों चढार क्षत्रिय कुमत मुनीन । सलूणा ।
 गज बालक लडते लखेरे, त्यां मुनि भेम विहीन । सलूणा । ११ ।
 गुरु भुव से यों जानवेरे, भावि भयङ्कर रूप । सलूणा ।
 अनशनकर स्वर्गे गयारे, चन्द्रगुप्त सुभूप । सलूणा । १२ ।
 श्रीहरि पूज्य जिनश के रे, शासन का विस्तार । सलूणा ।
 उदय समय होगा सहीरे, दिव्य कवीन्द्र विचार । सलूणा । १३ ।

ढीवाली व्याख्यान भाविकाल स्वरूप

गृही ली । १४० ।

। गुजराती रासडा पद्धति ।

दुखमय पचम काल कराल सरूप विचार कारे ।
 पूढे मश्र मभुसे सविनय गौतम स्वाम ।
 भाप अविस्वादी वीर मभु गुणधाम ।
 मुनकर पालन करना मुख कर धर्माचारकार । टर ।

(साखी) तीन वर्ष महिने अग्रिक, उपर साढा आठ ।
मम निवर्णानि-घरे, होगा पचम ठाठ ।
वह भी हागा निश्चय वरप इकीस हजार कारे । दु० १ ।

(साखी) होंगे पचम कालमें, मानव दुखिय दीन ।
भूमि रस कससे रहित, धन सपत्ति हीन ।
होगा भाश सही सब सार वस्तु विस्मार कारे । दु० २ ।

(साखी) उदय समय के यागसे, युगपरधान महान ।
जनमेंगे उनसे यहाँ होंग पुण्य विधान ।
छटेगा फिर भूढा जैन धरम परचार का रे । दु० ३ ।

(साखी) अन्ते होगा सबधा, जैन धर्म विच्छेद ।
ब्रह्मा आरा भी लगे, दुखम दुखम बहुखेद ।
उसका होगा वह परिमाण, जो पचम आर कारे । दु० ४ ।

(साखी) फिर होगी उत्सर्पिणी, ब्रह्म आरों की एक ।
उत्तरोत्तर होंग सही, उत्तम भाव अनेक ।
वैसे चलता है यह काल चक्र सेंसार कार । दु० ५ ।

(साखी) प्रवचन काल सरूपका, यों करके प्रभु वीर ।
द्व शर्म के बोध दित, गौतम का गुणधीर ।
भावीवश आदेश करें अन्यत्र विहारकारे । दु० ६ ।

(साखी) इन्द्रासन कम्पा तभी सृक्ति समय का जान ।

थाकर वदे इन्द्र भी, भावें श्रीभगवान् ॥

गद गद कठे बोल दुखसे वचन विचारकारे । दु० ७ ।
(साखी) भस्मकग्रह से योग है, हस्तोत्तर का आज ।

घडि आयुष की वृद्धिकर, निष्फल करदो आज ।
भापे वीर विषय यह जाना नहि अधिकार कारे । दु० ८

(साखी) भस्मकग्रह जब ऊतरे, उदय धर्म का जान ।
होगा भारतवर्ष में, धीरज हरि मन ठान ।

गावेगा तब गीत कवीन्द्र सुमगला चार कारे । दु० ९ ।

दोवाली व्याख्यान गौतम विलाप गहूली । १३ :

पंथाडा स-दशो केजे मारा धोरने इस तर्ज में ।

बीगराग जिन पारगत प्रभु वीर जी,

पावापुरमें मुक्ति सिधाये नाथ जो ।

अपुनर्भव अजरामर पदवी का लह,

हुआ भरतमें चउविध सय अनाथ जो । १ ।

क-याणक उत्सव हित आते देवके,

कौनाहल सुन जानाजिन निर्वाणजो ।

घजूहत भूदित गौतम स्वामी हुए,

करते शाक विनाप अनेक विधान जो । २ ।
 अन्त समय क्यों छोड़ चले हेनाथजी,
 जानकार हो छोड़ा जग व्यवहार जो ।
 गौतम गौतम कौन कहेगा अथ मुझे
 कौन हरेगा शस्य मम दुर्वार जो । ३ ।
 किसको जाकर अथ मैं पूछूंगा मभा ।
 द्याया आज यहाँ पर घोर अरजो ।
 अन्त समयमें दूर किया क्या जानके
 जाना क्या मंगिगा केवल सार जो । ४ ।
 अथवा माना हागा पीठे दान ज्यों
 आवेगा यह गौतम मेरे साथ जो ।
 अशरणशरण विरुद्ध धारक स्वामीकहो
 क्या मूर्खी जो दूर किया ह नाथ जो । ५ ।
 दते ता क्या खोट लग थी आपक
 आता ता क्या गिन हो जाता तग जो ।
 मवल विरह दासानन्द तनमनमें लगा
 जना रहा है काम हुआ बहग जा । ६ ।
 हा हा ! भूला वीतराग ये वीर थ
 रागी होकर भूला मैं निज भान जो ।
 मेरा तेरा मोट मत्र ससार में,

अध वना देता है दुःख अमान जो । ७।
 मेरा तेरा भाव जगत जजाल को
 छोड़ चढ़े गुण ठाणे गौतम सामनों ।
 यातो कर्म हटाकर केवल ज्ञानसे
 देखे परतिख लोकालोक तमाम जो । ८।
 दीवाली दिन वीर मशु निर्वाण श्री,
 गौतम स्वामी पाये कवल ज्ञान जो ।
 चउविध सप्रमुनीन हुआ मुखसिधुमें
 हरि कवीन्द्र जय बोले एकीतान जो । ९।

ज्ञान पचमी व्याख्यान गहूली । १४ ।

। राग—घनामिरि ।

ज्ञान सभी में सार, सुनोरी सखी ? ज्ञान सभी में सार । टेरा
 ज्ञानाराधन शिव मुखसाधन पचमी तिथि अवधार । सुनो०
 पठन-पाठन श्रवण मननो, करना ज्ञान प्रचार । सुनो० १।
 ज्ञान महागुण प्रकट पावें, मन वीरद्वित विस्तार । सुनो०।
 मन बच काया ज्ञान त्रिराधक, पावें दुःख अपार । सुनो० २।
 मन से शूय बन नहीं पाव, वस्तु विवेक लगाए । सुना०।

मृगमें रोगी मृगा होवे, काया कोड विकार । सुना००१
 कों करावें ज्ञान विराधना, मूरख जो नर नार । सुना०
 पुत्र कनक कुटुम्ब सह नाशे, परभव धन भडार । सुना०११
 अपि व्याधि और उपाधि, होवे अनक मकार । सुना०
 ज्ञाने ज्ञान विराधन वृत्ति, दना दूर निवार । सुना०११
 ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करा निर्गार । सुना०
 ज्ञानावरणी कर्म विनाश, रहे नहीं अधिकार । सुना १२।
 पुण मजरी-वरदत्त चरित को, लेना खूब विचार । सुना०
 विराधक-धाराधक भावे दुखिये सुखिये धार । सुना०७।
 श्रीहरि पूज्य कथित विधिपागे ज्ञानाराधनकार । सुना० ।
 दिव्य कवीन्द्र सुकीर्तित होकर, पावे भवज्जन पार । सुना०८१

कार्तिक पूर्णिमा व्याख्यान गहूली । १५ ।

चन्दा प्रभु जो से ध्यानरे मोरी लागी० इत तज में ।

कार्तिक पूनम दिन जयकारी, महिमा अवरपार ।
 सखी चित्त अवधारा चित्त अवधारा, कारज सारो
 सेवा विमल गिरि साररे । सखी चित्त अवधारा टिंग
 आदिनाथ प्रभु पोतररे, टाविड वारिखीत्तररे । सखी० ।
 दश कोडि मुनि सगमरे शोपे कर्म चिखिल्लरे । सखी०११।

अध बना दता है दुख अमान जो ।७।
 मेरा तेरा भाव जगत जजाल को
 छोड़ चढ़े गुण ठाणे गौतम सामनो ।
 घाती कर्म हठाकर केवल ज्ञानसे
 देख परतिख लोकालोक तमाम जो ।८।
 दीवाली दिन वीर मधु निर्वाण औ,
 गौतम स्वामी पाये केवल ज्ञान जो ।
 चउविध सयमुलीन हुआ सुखसिंधुमें,
 हरि कवीन्द्र जय बोलें पकीतान जो ।९।

ज्ञान पचमी व्याख्यान गहूली । १४ ।

। राग—घनामिरि ।

ज्ञान सभी में सार, सुनारी सखी ? ज्ञान सभी में सार ।टेरा
 ज्ञानाराधन शिव मुखसाधन पचमी तिथि श्रवण । मुना०
 पठन-पाठन श्रवण मननगे, करना ज्ञान प्रचार । मुना०१।
 ज्ञान महागुण प्रकट पावे, मन बौद्धित बिस्तार । मुना०।
 मन बच काया ज्ञान विराधक, पावे दुख अपार । मुना०२।
 मन से शून्य बने नहीं पावे, वस्तु विवेक लगाए । मुना०।

पुत्रमें रागी मृगा हावे, काया कोठ विकार । सुनो० ३।
 तरे करावे ज्ञान विराधना, मूरख जो नर नार । सुनो०।
 इत कनत्र कुदुप्य सह नाणे, परभव धन भटार । सुना०। ४।
 प्राप्ति व्याधि और उपाधि, होव अनक प्रकार । सुनो०।
 ज्ञाने ज्ञान विराधन हृत्ति, देना दूर निवार । सुनो०। २।
 ज्ञान ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करा निर्धार । सुनो०
 ज्ञानवरणी कर्म विनाशे, रहे नहीं अधकार । सुना । ६।
 गुण मजरी-वरदत्त चरित को, लना खूब विचार । सुनो०।
 विराधक-आराधक भावे दुखिये सुखिये धार । सुनो० ७।
 आदरि पूज्य कथित विधियागे ज्ञानाराधनकार । सुना० ।
 दिव्य कवान्द्र सुकीर्तिग होकर, पावे भवजन्म पार । सुनो० ८।

कार्तिक पूर्णिमा व्याख्यान गहूली । ४५ ।

ब्रह्मा प्रभु जो से ध्यानरे मोरो लागे० इत तज मे ।

कार्तिक पूनम दिन जयकारी, महिमा अवरपारर ।
 सखी चित्त श्रवणारा चित्त श्रवणारा, कारज सारो
 सेवा विमल गिरि साररे । सखी चित्त श्रवणारो टिंग
 आदिनाथ महु पातररे, द्राविड वारिखील्लरे । सखी० ।
 दग काटि मुनि सगमरे, शोपे कर्म चिखिल्लरे । सखी०। १।

द्रव्य क्षत्र अरु काल भाव ये पाकरक अनुकूलरे । सखी०
 तीरथ राता सेवा भाव वाला कर्म समूल र । सखी०२।
 शक्ति अभाव तीरथ समुख बन्दन भक्ति विशेषरे । सखी०।
 द्राविड वारिगिःलक जैसे गाढा राग रुद्र परे । सखी०३।
 सुत्रतधारी हा ब्रह्मचारी रययात्रादि विधानरे । सखी० ।
 समक्कि निर्मल कारणठानो निज निज शक्ति प्रमानरसखी०६
 शत्रुजय गिरि जो भवि भङ्, शत्रुजय होजाय रे । सखी०।
 नटि तो गर्भावासी दे बह श्रीजिन आगम गायरे । सखी०५
 अष्टोत्तरश नाम विरात्री विमलाचल गिरिराजरे । सखी
 साधु कर्म खपाकर पाये, यहाँपर पर शिवराजरे । सखी०६।
 कागी पूनम पर्व आगये तीरथ भक्ति सुधारर । सखी० ।
 सदगुरु बोध सुधारम पीरु मफल करा अग्रताररे । सखी०७।
 श्रीहरिपूज्य प्रभु आदीश्वर जाप जपा तिहु कालरे । सखी०।
 दिव्य प्रोन्ट सुकीर्तितपदना नित्य विजय वरमालर । सखी०८



मौन एकादशी पर्व व्याख्यान गहूली १४६।

सीता माता का गोदी में हनुमत डारी मू दडी ।

इस तर्ज मे ।

भविष्यो करके याग निराध, विराध मिटावनार । १ ।

सेवा मौन एकादशी पत्र चित में हाकर आप अगर्व ।

शकट आत्म सिद्धि सब परम सुख पावनार । भवि० १।

पूर्व सविनय कृष्ण नरश, वन्दन करक नमजिनेश ।

सबसे दिन है कौन विग्रह जिसे आराधनार । भवि० २।

भाषे जिनवर नगदाधार मिगस्तिर सुदि एकादशी सार ।

जिसका महिमा का नहीं पार मुरारि धारनारे । भवि० ३।

उस दिन अरजिन दीक्षा जान, प्रकृत्य नामिजिन केवलज्ञान ।

मलनी जनम-सुदीक्षा ज्ञान, कल्याणक भावनारे । भवि ४।

पाँच भरत ऐरवतमें मान, ऐसे पच कन्याणक ठाण ।

गिनते होत पचास प्रमाण, नियम निर्धारनारे । भवि० ५।

कान्तत्रय से गिनते खास, होवे सौ ऊपर पन्चास ।

लखते कान्त अनन्त विलास, अनन्त ज गावनारे । भवि० ६।

यह दिन कल्याणक मण्डार, आराधो पावो भव पार ।

“सुग्रत श्रेष्ठ” चरित सुनसार, करो पर भावनारे । भवि०

बाणी सयम मौन मुधार, उपवासी होकर निर्धार ।
 जिनगुण माला श्रद्धाकार, करमकट जावनारे । भवि-१८॥
 यों मुन नेमीश्वर उपदेश आरार्थे श्रीकृष्ण नरेश ।
 आगे होंग जो तीथेश, तथा तुम ध्यावनारे । भवि०१०॥
 श्रीहरिपूज्य परम गुरु बोध, सुनकर करना वचननिगोध ।
 दिव्य कवीन्द्र मुकीरति धोध, करें विस्तारनारे । भवि०१०॥

पौषदशमी पर्व व्याख्यान गहूली १७७

राग वनभारत—जगमे नहां तरा कोई नर देख तू०
 इस तर्ज मे ।

नमो वीर जिनश्वर राया, जिननेसत धर्म बताया । टेर ।
 प्रभु चम्पापुर में आव, सुर समवसरण विरचावें ।
 तब बारह परीपद भावे, प्रभु बोध सुनें सुखदाया । नमो०१॥
 चतुरङ्गी सेना सगे उन्मवपूर्वक बहु रङ्ग ।
 कौण्डिक नृप भक्ति उमगे, जिन चरणे सीस नमाया । नमो०२॥
 जग जीव दया दिल गारो, विषयों से इन्द्रिय वारो ।
 शुभ सत्य मद्रैव उचारा, यों धर्म रहस्य भुनाया । नमो०३॥
 पछे तब गौतम स्वामी अउनाणी जग हितनामी ।
 वदो पौष दशमका नामी, माहात्म्य कहो जिनराया । नमो०४॥

जिन पार्वी जनम दिन जानो, कल्याणकमय परमानो ।
 का धर्म किया तब ठानो, यों वीर मरु फरमाया । नमो०५।
 आराधन कर शिव जावे, मूरदन यथा जग गावे ।
 आराधो त्यों भवि भाव, जो सुख चाहो मनभाया । नमो०६।
 का पीप दशम आराधे, हरिपूज परम पढ साधे ।
 अग्नि गुण सिंधु अगाधे सुकबोन्ट भी पार न पाया । नमो०७।



मेरु त्रयोदशो व्याख्यान गहू लो । १८ ।

। तिमला चल धासा म्दारा प्दाला सेवक ने विसारो नही-
 रे विसारो नहीं । इस तर्ज मे ।

मुखदायक श्री जिन वाणी सुजन चित धारो महीरे
 विसारो नहीं । टेर ।

गीतम गणधर आदिक परिषद का उपन्श वीर ।

मेरु तरमको आराधो महिमा गम्भीर ।

सुजन चित धारो मही रे विसारो नहीं । १ ।

मायपदी तेरस दिन उत्तम, आदीश्वर अरिहन् ।

भवधारी सब कम विनाशी होगये जिव बधू कन् ।

सुजन चित धारा सही रे विसारो नहीं० । २ ।

सातें उम दिन का आराधन विधि पूर्वक ला धार ।

दुर्गति हेतु जान हृदय से पच प्रमाद निवार ।

सुजन चित्त धारो सहीरे विसारा नहीं० । ३ ।

सौ विदार वपवास करो भवि आदीश्वर का ध्यान ।

रत्न कनक रूपे या घीके मेरु चढ़ाया महान ।

सुजन चित्त धारा सही रे विसारा नहीं । ४ ।

समकित सुप्रत शील परम गुण गण रत्नों की म्भल ।

उद्यम पूर्वक प्रमे पहनो दूर टले जजाल ।

सुजन चित्त धारो सहीरे विसारा नहीं० । ५ ।

विक्कट कोटि सक्कट कट जाव निविड करम हों नाश ।

'पींगल राय' चरित अवधारो सोड़ा माहनी पाश ।

सुजनचित्त धारो सहीरे विसारो नहीं० । ६ ।

सुख सागर भगवान परम गुरु श्री हरि पूज्य जिनेश ।

आज्ञा रगी जीवन जनके गुण गावे कपोन्द्र हमेश ।

सुजन चित्त धारो सही रे विसारो नहा० । ७ ।



होली निषेधोपदेश गहूली । १८ ।

। जय होली रे पाम्म जिनेशर की परमेशर का जय होली ।
इस तज में राग होला ।

- मत सेनो रे होली विचार करो मत गला । टेर ।
कुन-जाति लज्जा मर्यादा, हाली में म्वाहा न करा । मत० ।
गाला गाना नीच जनों का है लक्षण यह क्यों विसरा । मत० १ ।
मैना-भूत्र जलादिक छाँटा, भगी से क्यों भेद धरा । मत० ।
माया बहिन घेटियाँ घैठी उनका ता कुद्ध ख्याल करो । मत० २ ।
निज सातिको दुष्कर्मों की, शिक्षा देते क्यों न डरो । मत० ।
गर्भोपर चढ़ते भी शोचो, किस कुनका व्यवहार करो । मत० ३ ।
पाकर भद्र कहा क्यों अपनी, मर्यादाभा भग करा । मत० ।
रग उठाकर निज का ही क्यों, रग जगत से लाप करो । मत० ४ ।
बनकर धार्य धनार्य सरीखे, कामों को कर क्यों विगरो । मत० ।
हाली के दुष्कर्मों के भी, प्रायश्चित्त सुनो सुगरा । मत० ५ ।
पाप सरूपी है द्रव्य होली, कर क्यों दुर्गति जाय परो । मत० ।
होना खनन को जो चाहो, ता कर्मों की होली करो । मत० ६ ।
कर्मों की होली जो होली, कभी न जनमो नहीं मरो । मत० ।
सुख सागर भगवान जगतमें, श्रीहरि पूज्य हुए विचरो । मत० ७ ।
होली का व्याख्यान सुनो फिर, मनमें चिंतन खूब करो । मत० ।
दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी, यश कीरति विस्तार करो । मत० ८ ।

चैत्री पूर्णिमा व्याख्यान गहूंली । ५० ।

जाया नवाणु करिय विमलगिरि० इस तर्ज में ।

चैत्री पुनम चित्त धारो र भविका, चैत्री पुनम चित्तधारो ।
 गुरु उपदेश विचारो रे भविका, चैत्री पुनम चित्त धारो । टेर ।
 चैत्री पुनम दिन आदीश्वर के गणधर पुण्डरीक स्वामी ।
 पाँच कोटि मुनिसग विमलगिरि, होगये शिवगति गामीरे । भवि० १ ।
 पुण्डरीकगिरि नाम प्रसिद्धो, पाप गने पुण्डरीक ।
 होकर के उपवासी सेवो, चैत्री पुनम दिन ठीक रे । भवि० २ ।
 पुण्डरीक गणधर गिरि ध्यावो, आदीश्वर अरिहन्त ।
 द्रव्य भाव पूजा-देव बन्दन, करो करमदल अन्त रे । भवि० ३ ।
 सिद्धाचल यदि जा नही सकते, निजघर नगर विशेष ।
 गिरि समुख पट बधन करके, पर्व आराधो अशेष रे । भवि० ४ ।
 रोग शोक-दौर्भाग्य वियोगा, भूत मेन हट जावे ।
 पर्वाराधन करते भविजन, चउगलि छेदक भावे रे । भवि० ५ ।
 दुर्भागी कन्या के चरित से, श्री गुरुवर समजावे ।
 शुद्धानभ्यन योगे प्राणी अजरामर पद पावे रे । भवि० ६ ।
 सुख सागर भगवान परमगुरु, श्रीहरि पूज्य मभावी ।
 शिवपुरद्वारको खोलो ऐसी, देत कवीन्द्र सुचावी रे । भवि० ७ ।

अक्षयतृतीय व्याख्यान गहूंली । ५१ ।

- शरिया यामु शीत सर्गो रे सत्त्वा भाव सू । इस तर्न मे ।
 त भूनो भविष्यो ! कृष्टिन गति है आठों कर्म की ।
 त नाश उन्हीं का, सिद्धि लहो रे आत्म धर्म की । टेर ।
 त महर तक पूरव भव में, आदीश्वर जिन जीव ।
 तीसरी बँनोंके मुख बाँगी, दी अन्तराय अतीवरे । मत० १।
 आदीश्वर भव दीशानतर, कर्मोदय फल भावे ।
 त्रमासतक शुद्ध गोचरी, अशमात्र नहीं पावेरे । मत० २।
 त्तरत मधु द्यणापुर आये, वह आर्योस कुमारा ।
 त्रिगोमे स्वप्न लखे दिनमें फिर, मधु मुनिवेश विचारा रे । मत० ३।
 तला समरण प्रकटा जाना, गोचरी विधि विस्तारा ।
 त्रिगु-कचन-कन्याके दानो लख लोकोंको वारा र । मत० ४।
 त्र लोकों को समझा कर के ईशु रस विहराव र ।
 त्र दानविधि फिर प्रकटाव, पचदिव्य सुर लावेरे । मत० ५।
 त्रिमान श्रेयास भाव अरु पात्र जिनेश्वर जानो ।
 त्रिमान ईशुरस योगे, अक्षय भाव बखानो र । मत० ६।
 त्रिपय तीज हुई उस दिन से, अक्षय पद गुण धारी ।
 त्रिभविनाश हुआ तब जिनको प्रकटा गुण अविकारीरे । मत० ७।

कर्मोदय का तोड़ा प्रभु न, धीरवीर हो कर के ।
 वैसे ही सब कर्म विनाशा निज ममादको तजके रे । मतः
 श्रीहरि पूज्य परम गुरु शासन, वासित चित्त बनाओ ।
 दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी कीरति खूब गवाओरे । मतः

श्री कल्पसूत्र महिमा गृह्य लो १५२ ।

तज जिल्ला की ।

कल्पसूत्र वर कल्प तरु आरागो रे शिव साधो नर नार
 मन बौद्धित फल पावो दुख मिटावो रे, सुजाण । १
 आतम भूमि शुद्ध करो भवि माणोरे, गुम्वाणी मुन सार
 कल्प सूत्र वर कल्प बोजको बोवो रे, सुजाण । २
 पुण्य अकूर सनूर सफलता लावेरे, बहुदावे हितकार ।
 दूर ममाद-विपाद विवाद मिटावो रे, सुजाण ॥ ३ ॥
 काल लवधि अतुङ्गल हरे भयशूल रे, करे दूर विकार ।
 गत दूषण पर्युपण भावे ध्यावो रे, सुजाण ॥ ४ ॥
 पूजा-परभावन उत्सव विधि भारी रे, जयकारी मनुहार ।
 सुव्रत-सयम रत हो पाप नशावो रे, सुजाण ॥ ५ ॥

जिन दर्शन-गुरु बन्धन पाप निकन्टे रे, आनन्द विहार ।

जिन दर्शन गुण निर्मल मूढ बनावो रे मुजाण ॥ ६ ॥

शरीर पूज्य परमगुरु बोध सुनावे रे, समभावे विचार ।

मेघ कवीन्द्र महोदय भटपट पावो रे, सुजाण ॥ ७ ॥

श्री कल्प सूत्र प्रथम व्याख्यान गहूलो । ५३ ।

जिन-सखिया गावो रे काइ गावो गुद गुल माल सखियाँ० ।

सखियाँ मुन लो रे, कोई कल्प मूत्र अधिकार ।

सखियाँ मुन नो रे । टर ।

जिन चरित्र थराबली, कोई सामाचारी सार । सखियाँ० ।

विण मनन परिणाम करो, कोई ये तीनों अधिकार । सखि० १ ।

॥ आदि जिन वीर के कोई शासनवित अणगार । सखि० ।

॥ येनक आदि बहें, कोई दश कपी आचार । सखियाँ० २ ।

जुनइ बकजडागयी, कोई परिणाम भाव विवाध । सखि० ।

जम चरम अरु अयजिन, कोई साधुभेद अविरोध । सखि० ३ ।

जिकि लोकानर सभी काइ परं शिरोमणि जान । स० ।

जुंषण सत्तार में, कोई उममें पुण्य विधान । सखियाँ० ४ ।

जिनमण सबत्सरी, कोई लाच अन्ध तप धार । सखि० ।

जिन बदन अरु खामणा, कोई साधु शुद्धाचार । सखि० ५ ।

द्रव्य भाव पूजा करे , काँइ खमें खमाव आप । सखियाँ०
 ज्ञान-सध भक्ति करें , काँइ श्रावक छोड़ें पाप । सखि०६ ।
 'नाग केतु' दृष्टाँत से, काँइ श्रुठम तप अविकार । सखियाँ
 परमेष्ठि ध्यानें सही काँइ जिन जीवनी विस्तार । सखि ०७
 पच्छानु पूरवो सुनो, काँइ वीर चरित्त विस्तार । सखियाँ०
 मोटे सत्ताबीस भव, काँइ चउगति विविध प्रकार । सखि०
 प्राणत नामक स्वर्ग में, काँइ पुष्पोत्तर सुविमान । सखियाँ०
 वहाँसे सुरभव भोग तज, काँइ च्यवते पुण्य निधान । स० ९
 पूरव भव में गोत्रमद, काँइ कृतकमेदिय पाय । सखियाँ०
 देवानदा द्राह्मणी, काँइ कूख वसे तव आय । सखि० १
 चौद सुपन कल्याण मय काँइ लखती है वह ताम । सखि
 हरि कविन्द्र करते तभी, काँइ सविनय भाव प्रणाम । सखि० :



श्री कल्पसूत्र द्वितीय व्याख्यान गहूली । प्र

तजं पणिहारी

अवधि ज्ञानविशेष से मारावाहालाजी

च्यवन कल्याणक जान वाहालाजी

सौधर्माधिपति स्तवे मारा वाहालाजी

नमो नमो भगवान वाहालाजी । १ ।

धर्म आदि कर दे ममो ? मारावाहान्ना जी
 अन्तिम तीरथ नाथ वाहान्नाजी ।
 बन्दन करता हू यहाँ मारा वाहान्नाजी
 मोहे करो सनाथ वाहान्नाजी । ३।
 भाव सहिा कर वैदना मारा वाहालाजी
 सोचे हृदय मभ्कार वाहान्नाजी ।
 नीच कुल नावें सही मारा वाहालाजी
 अरिहादिक अवतार वाहान्नाजी । ३ ।
 काल अन्तते होत हैं मारा वाहालाजी
 अचरिज विविध प्रकार वाहान्नाजी ।
 कर्मोदय से वीर लें मारा वाहालाजी
 नीच कुल अवतार वाहान्नाजी । ४ ।
 ऐसे दश अचरिज हुए मारावाहान्नाजी
 इस अवसर्पिणी मान वाहान्नाजी ।
 सूत्रकार फरमा रहे मारा वाहालाजी
 दसो चतुर सुजान वाहालाजी । ५ ।
 नीच कुल की काय से मारावाहालाजी
 पर जनमें ना कौय वाहालाजी ।
 साते परिवर्तन कम् मारा वाहालाजी
 सम्भुचिग यह होय वाहालाजी । ६।

हरिणगमेपी देव का मारा वाहान्नाजी
 इन्द्र करे आदश वाहान्नाजी ।
 देवा नैदा गर्भ का मारा वाहान्नाजी
 त्रिशन्ना कूब प्रवेश वाहान्नाजी ॥ ७ ॥
 गर्भ परिवर्तन कर मारा वाहान्नाजी,
 हरिणगमेपी देव वाहान्नाजी ।
 श्री त्रिशन्ना शिवकर लखे मारा वाहान्ना जी,
 चौदह सुपन तर्क्य वाहान्ना जी ॥ ८ ॥
 तय देवा नन्दा लखे मारा वाहान्ना जी,
 पूरव कर्म मभाव वाहान्ना जी ।
 हस्तो हँ मम भवम को मारा वाहान्ना जी,
 त्रिशन्ना सहज सभाव वाहान्ना जी ॥ ९ ॥
 गर्भहरण कृत्याणके मारा वाहान्ना जी,
 यह दूना व्याख्यान वाहान्ना जी ।
 हृदि कवीन्द्र सुनकर भूवी मारा वाहान्ना जी,
 पावो पद कृत्यान वाहान्ना जी ॥ १० ॥



कल्प सूत्र तृतीय व्याख्यान गहूली । ५५ ।

तत्र-मोना ग्या के मागटे संया स लत याजा० ।

सुख शय्या सोनी हुई सती त्रिशना माना ।
 निव वर चीदह स्वम का, पाव सुख साता ॥ सुख० १ ॥
 जग कर हसी चाल से, पियु पास पगारी ।
 सनिय सुपनों की कया, कर्दा विगारी ॥ जग० २ ॥
 राता सिद्धारथ कहें मुनो मान पियारी ।
 मान-शिव कट्याणमय, सुपने हैं भारी ॥ राजा० ३ ॥
 भाग पुत्र मुराज्य सुख, शुभ लाभ मिलेगा ।
 इन बुल, कमल भी आजसे, वस सूत्र मिलेगा ॥ भोग० ४ ॥
 नक्षत्र यजन गुण भरा, सुकृमान शरीरा ।
 ज्ञान रात हागा सही, जग में बड वीरा ॥ लक्षण० ५ ॥
 जल भाव को छोडते, चक्री बह होगा ।
 गों देवो ! है मुनो, शुभ स्वमसुयागा ॥ बाल० ६ ॥
 जे त्रिशना हर्षित हुई, मृदु वचन उचारा ।
 र्थ समर्थ कहा ममो ! पियु माण आधार ॥ सुन० ७ ॥
 दर भन्दिर में बसे, धर्म ध्यान सुनीना ।
 त्व से गर्भ उभा, कुर, सती धर्म मवीणा ॥ सुन्दर० ८ ॥

श्री हरिपूज्य हुई तदा, त्रिशला जगमाता ।

दिव्य कवीन्द्र कहें सदा, जय जय जिन माता ॥ श्रीहरि० १

श्री कल्पसूत्र चतुर्थ व्याख्यान गहूली । ५

(षष्ठ्य समय गीत)

तर्ज—म्हासू मृदे बोल० ।

श्री सिद्धारथ नृप आदेशे, सुपन शास्त्री आवे रे ।

जय विजयादिक सूचक शब्दें, खूब बधावें रे ॥

कि मगल गावो रे ॥ टेर ।

स्वम फलों को पूछे राजा, पढित भाव बतावें रे ।

पुत्र चक्री तीर्थ कर होगा, पुण्य मभावें रे ॥

कि मगल गावो रे ॥ १ ॥

सुन कर हर्षित राजा देवें, दात्र अनेक भकारे रे ।

पटराणी को पुन सुना कर, दु ख विस्तारें रे ॥

कि मगल गावा रे ॥ २ ॥

इन्द्रादेशी तिर्यक् जू भक, धन कचन बर्पावें रे ।

गर्भ मभावे सिद्धारथ नृप, राज्य ऋद्धि बढ़ जावें रे ॥

कि मगल गावो रे ॥ ३ ॥

वर्द्धमान भावों को लख कर, राजा राणी भावें रे ।
पुत्र हुए से 'वर्द्धमान' शुभ नाम धरावें रे ॥

कि मंगल गावो रे ॥ ४ ॥

मातृभक्ति अरु अनुकम्पावश, गर्भ रहे मधु शोचें ।
'गर्भ व्यया का रोकू यों निज अग सकोचें रे ॥

कि मंगल गावो रे ॥ ५ ॥

निश्चल गर्भ रहे सब माता, मोह वशा हो रोवे रे ।
हरा मरा या गला गर्भ मम चलन जरा न्ध होवे रे ॥

कि मंगल गावो रे ॥ ६ ॥

यों माता के भाव जान कर बहाँ अभिग्रह धारें रे ।
'मात पिता के जीते ना लू दीक्षा' अग सचारें रे ॥

कि मंगल गावो रे ॥ ७ ॥

होवें जो जो दिव्य दोहले राजा वो वो पूरे रे ।
करें गर्भ रक्षा सुख पूर्वक पाप को चूरे रे ॥

कि मंगल गावो रे ॥ ८ ॥

साडा साग दिवस नौ मदिन यों पूर जब होवें रे ।
ऊचे स्थानक बैठे ग्रह शुभ—दृष्टि से जोवें रे

कि मंगल गावो रे

रैत गुन नरग दिन उतरा पान्गुनी करवे रे ।
 टि नरग्न जिन ज्ञान लई, गुन घौन्ह मेरे ॥

रि मगज गावा रे ॥ १० ॥

श्री महाशैव जिन भूगना गोन । १७ ।

नर—गान नगउ दल मट अथरिज मन आय ।

(गान रिया)

हुनर हुनर रीर हुनर विगना माया गावे ।
 विगना माया गाव पार, भूलण सुनारे ॥ १ ॥
 नन्द तेरे नूर कोटि, चंद्र पूर नारे ।
 दरस फरस करग तरस, नयन ही न नारे । हुनर ० १ ।
 उठत-पहन रमग धमग खल नू मरार ।
 पर मेर लाल ! नरी, धान विग नुरार । हुनर ० २ ।
 कनक पडिग रतन जडिग विविध रग भारे ।
 लाल ! भूला देख जगग, धान भी सुनारे । हुनर ० ३ ।
 हीर चीर भूलण, सुदोरी के खाचार ।
 रमक भूमक रमक भूमक, घूषरा नचारै । हुनर ० ४ ।
 लाल ! तेरा थग रग, गाव का सुनारे ।

- चग गग नीर, शीतलाइ को दठाव । हुलरे ० २ ।
 तू निन जाम से पवित्र कूख मम बनावे ।
 चाँद राज राज आज, मेरे पाम आवे । हुलरे ० ६ ।
 पशि कुमार कथिा सार, वचन याद आव ।
 हाथ नाथ अपने साथ, तू मुझे पुजावे । हुनर ० ७ ।
 मगसा वस्तु राज्य रत्न गर्भ में बढाव ।
 बर्द्धमान गुणनिगान नाम तेरो ठावे । हुलरे ० ८ ।
 नद ! नदी वर्णन की श्रु तुझे रमावें ।
 देव देवर कर पुकार वारी वारी जावें हुलरे ० ९ ।
 चटक भूप बन्धु मेरे रूप तव लखावें ।
 गोद हाथ खध पे उठाय मोद पावें । हुलरे ० १० ।
 सुमणि रत्न रचित दिव्य खिनोने बसाव ।
 निकट दूर करत विविध भाति से हँसाव । हुलरे ० ११ ।
 पोथि हाथ धार लाल ! पठन काज जावें ।
 बाल ख्याल करत बाल साथ तू सिगावे । हुलरे ० १२ ।
 वर कना विलास विशद वास के मभाव ।
 ज्ञान बान तू महान वय युवान पावे । हुलरे ० १३ ।
 अन्ध रूप राज कन्य का विवाह दावे ।
 सधर नार मधुर कठ धरल गीत गावें । हुलरे ० १४ ।

उन्नीससौ सत्यासी भाद्र चतुरदशी भावे ।

हरि कवीन्द्र वृन्द वीर 'जयपुरे' सुध्यावे । ह्यूलरे ० १५ ।



श्री कल्प सूत्र पचम व्याख्यान गहूंली । ५८

तर्ज- तीरथ नी आशातना नवि करिये, हारे नवि करिये ० ।

तीन ज्ञान से अपने जिन चन्दा

हाँ रे भवि कमल विकाश दियादा ।

हाँरे व दत्त तोड़ें भवफन्दा,

हाँरे मक्के अन्नहृद सुख कदा ।

हाँरे आनन्द अपार

तीन ज्ञान से अपने जिन चन्दा । टेर ।

छप्पन दिग कुमरी मिली वहाँ आवे,

हाँ रे जिन जिनमाता नवरावे ।

हाँरे सब सृति कर्म रचाने,

हाँरे करे नाटक सार । तीन ० १ ।

सुरपति सुर गिरि पे मञ्जु ले जावे,

हाँरे लघु शङ्ख मन में लावे ।

- हॉरे वीर मेरु शिखर कम्पावें,
हॉरे देवें शँका टार । तीन० २ ।
- सिद्धारथ राजा करे सुख कारा,
हॉरे जिन जन्मोत्सव निर्घारा ।
- हॉरे द्वाति गोत्री जिमा फे उचारा,
हॉरे वर्धमान कुमार । तीन० ३ ।
- शक्ति मशसे वीर की हरि मारी,
हॉरे आवे देव परीक्षाकारी,
- हॉरे बहुरूप घरे भयकारी,
हॉरे लहें जिन जयकार । तीन० ४ ।
- मोह वशे माँ बाप भी ले जावें,
हॉरे पढ़नें को उत्सव भावे ।
- हॉरे हरि ब्राह्मण रूप ले आवे,
हॉरे पूछे मश्र विचार । तीन० ५ ।
- भेद सभी सब ही खून जावे,
हॉरे योवन वय सुन्दर पावें ।
- हॉरे नृप पुत्री यशोदा व्यावे,
हॉरे जन्म कमल मकार । तीन० ६ ।
- मात पिता स्वगे सुख पावें,
हॉरे निज पूर्ण अभिग्रह भावें ।

हॉरे भारे आझा से ठहराव ,
 हॉरे शुभ दीक्षा विचार । तीन० ७
 साधु सम प्रभु जी रहें समारें ,
 हॉरे सम्बत्सर दात प्रचारें ।
 हॉरे तब दीक्षा हेतु उचारें
 हॉरे लोकान्निष्काचार । तीन० ८ ।
 नन्दी वदूँत इन्द्र के महचारी,
 हॉरे करे दीक्षात्सव बहु भारी ।
 हॉरे कहे जग जन जय जयकारी
 हॉरे होवें वीर अणुगार । तीन० ९ ।
 मन पर्यर वर ज्ञान भी तब भासे,
 हॉरे सड़ी मन वस्तु मकासे ।
 हॉरे तिस दिव्य कबीन्द्र विनासे
 हॉरे छठ तप को धार । तीन० १० ।



श्री कल्पसूत्र पंचम व्याख्यान गहूलो । ५६

तर्ज-भविता श्री जिन विग्ध जुहारो ।

भविता वीर चरित चित लावो, आत्म शक्ति जगावो ।

र भविता वीर चरित चित लावो । टेर ।

सविनय इन्द्र मधु को भाप, बार वर्ष तक स्वामी ।

उपद्रव होंग बहुनेरे, सेवा करू सिर नामी । र भवि० १

भापे वीर हुआ नहीं होगा, धरिहा पर शक्ति से ।

केवल ज्ञान उपाव पावें, आत्म गुण व्यक्ति से । रे भवि० २

अग्नि ग्रामे शूल पाणि जप्त करे उपद्रव भारी ।

परम शान्त दशा लखी मधुकी, तय भक्ति विस्तारी । रे भवि० ३

मासाधिक सबत्सर तक मधु, देवदुष्य पटधारी ।

बाद अयम्ब सुशोभन काया, सहें उपद्रव भारी । र भवि० ४

कनक खन वनमें चण्ड कौशिक, सर्प महा भयकारी ।

धुज्भ २ कहरुर मतिपोधे, जाउ जिन बलिहारी । रे भवि० ५

गोशालक कुशिप्य मभावे, दुःख सहें अविकारी ।

सगम मुर करे घोर उपद्रव, जिन निश्चल चित धारी । रे भवि० ६

अभिग्रह अति दुष्कर धारी, स्वामी भाव सनूरे ।

उड़दः वाकुला वैदीयेरे, चदनबाला पूरे । रे भवि० ७

कानों में कौंसी के खीले गोपालकने डाले ।

हुई कायिक पीडा प्रभु को, खरक बँध निकाले । रे भवि० ८
 अन्य भी कट पूतनादि उपद्रव, बारह वर्ष विचालें ।
 सम भावे सहकर सब स्वामी, कर्म सघनवनबालें । रे भवि० ९
 लोका लोक प्रकाशक केवल, ज्ञान महोदय पावें ।
 सुरपति रजत कनक मणिरतने, समवसरण विरचावें । रे भवि० १०
 गौतम आदिक धारह पंडित, शक्ति अरु अभिमानी ।
 शका मान हठाकर थापें, गणधर पद गुणध्वानी । रे भवि० ११
 सद्य चतुर्विध थापें स्वामी, सुर नर पूजित पाया ।
 बहतर वरप स्वआयुष भोगी, पात्रा पुरजिन रायारे । रे भवि० १२
 मोले पहर उपदेश सुनाकर, अन्त शैलेशी ठावें ।
 भवधारी चउकर्म हठाकर, एक समय शिव जावें । रे भवि० १३
 काती अमावस स्वाति करयाणक, वीर विशु निर्वाण ।
 वीतरागता भावे पावें, गौतम केवल ज्ञान । रे भवि० १४
 वीर प्रभु आदर्श चरित को निज आदर्श बनावें ।
 हरि कवीन्द्र मुकीर्तित होकर, परम महोदय पावें । रे भवि० १५



श्री कल्पसूत्र छठ्ठा व्याख्यान गहूली । ६०

तर्ज—क्या कहूँ कथन मैं मेरा नाथ ।

जिन जीवन सुखकार रे सखिया जिन जीवन सुखकार ।

निज जीवन हितकार रे सखियाँ जिन जीवन सुखकार । डेर ।

जन-जनम दीक्षा तथा रे, केवल वर निर्वाण ।
 । विराखा में हुए रे, पारस जिन कल्याण । रे सखि० १।
 एव द्वेषी कमठकारे, दूर किया अभिमान
 ॥ सहित आत्म शक्तिसे नमो नमो भगवान् । रे सखि० २।
 जन्तते अहि को दिया रे, परम मत्र नवकार ।
 पाया नागेन्द्र सुखदपद, जय जिन जगदाधार । रे सखि० ३।
 पादानी पास जिनेश्वर, सरस चरित्त चित्त घर ।
 मुख सुनकर भविजन भावे पावो भवजन पार । रे सखि० ४।
 । मत्र का तत्र राग जिन्होंने, वीतरागता धारी ।
 शीश्वर परमेश्वर बन्दों, कामविजयी जयकारी । रे सखि० ५।
 ए प्रबल बलदर्प जिन्होंने, कौता चकनाचूर ।
 खनाकर आदर्श अरूपम, ब्रह्मचर्य का रूर । रे सखि० ६।
 गुरक्षा हित निज सारथि को, जिनवर दें आदेश ।
 ग्णा कामलता भी जिनकी, है आदर्श विशेष । रे सखि० ७।
 जीमती सच्ची सगी रे शीलरती गुणधाम ।
 नेमि को राह पे लाई, मात काल प्रणाम । रे सखि० ८।
 रस नेमीश्वर की ऐसी, पावन अरु परसिद्ध ।
 रे कवीन्द्र जीवन कथारे, अभ्यासे सुख सिद्ध । रे सखि० ९।



श्री कल्पसूत्र सप्तम व्याख्यान गह्वली । ६१

तज—केशरिया थासू प्रीत लागी रे साचा भाव सु ।

मत्रि भावे सुन लो ऋषभ चरित अधिकार को ।
 सुन दूर हठाओ दाकण कर्म विकार को । ४ ।
 'धनसारथ वाहक' भवे रे देकर धी का दान ।
 समकित गुण पैदा किया रे, ऋषभदेव भगवानजी । भवि० १ ।
 'वज्रनाभ' चक्री भवे रे बीस स्थानरु सेव ।
 तीर्थ कर शुभ कर्मकारे, बाँध हूण जो देव जी । भवि० २ ।
 'श्रीनाभिकुलगर' मियारे, मरुदवी' के मन्द ।
 युगल रीति वारक हूण रे, श्रीयुगादि जिनच'दजी । भवि० ३ ।
 'भरत वाहुवली' आदि थे रे, पुत्र एक सौ वीर ।
 'ब्राह्मी सुन्दरी' बालिका रे, गुणसागर गम्भीरजी । भवि० ४ ।
 पुरुषकला नारीकला रे आदिक जग व्यवहार ।
 अस्ति मसी कृपिकर्मकारे, जिनन किया मचारजी । भवि० ५ ।
 शुद्धाहार विना रहें रे, दीक्षा ले अकलेश ।
 अन्तराय के योग सेरे, वारह मास विशेष जी । भवि० ६ ।
 निदूषण ईशुरसे रे, 'श्री श्रेयांस' कुमार ।
 नाथ करावे पारणारे, वने जय जयकार जी । भवि० ७ ।
 मयम भूप भिक्षु मयम रे, मयम वेउली जान ।
 तीर्थ कर मुखकर पहिलेरे, देवे शिवसुख दानजी । भवि० ८ ।

श सद्म मुनि सग में रे, अष्टापद अरिहन्त ।
रि कवीन्द्र वन्दित हुए रे, अनुपम शिवबधुकन्त रे । भवि० १ ।

श्री कल्पसूत्र अपृम व्याख्यान स्थविगवली
गहू ली । ६० ।

तर्न—लघुता मेरे मनमाना, ७ह पुरमम हान निशानी रे० ।

१ वन्दों स्थविर जयकारी, वन्दत नित आनन्दकारी रे ।

वन्दा स्थविर जयकारी । १ ।

जिन वीर पटोपर भारी, गौतम आदिक गणधारी ।

र्शन नित मगलकारी रे, वदों स्थविर जयकारी । २ ।

पुथर्मा सन्तानि आजे, भारत में बहुगुण राजे ।

बहु मानिन भविक समाजे र, वन्दों स्थविर जयकारी । ३ ।

अन्तिम केवनि शिवगामी, प्रत्यचारी जम्नू स्वामी ।

ममवादिक बोधरु नामी र, वन्दों स्थविर जयकारी । ३ ।

श्रीमभव भक्षु श्रुतज्ञानी, श्रीमनक पिता श्रुतदानी ।

पशोभद्र मुभद्र विधानी रे, वन्दों स्थविर जयकारी । ४ ।

अन्तिम सब पूरवधारी, भद्रवाह निर्युक्तिकारी ।

स्थुलिभद्र मदन मदहारी र, वन्दों स्थविर जयकारी । ५ ।

क्रम से विभु वज्र विराजी जिन की जग कीरति गाजी ।
 हुई शाखा वज्र सुगानी र, वन्दों स्यविर जयकारी । ६ ।
 न्यायाम्बुधि भृदि सुधाकर, श्री सिद्धसेन दिवाकर ।
 हरिमद्र मधु पण्डितवर रे वन्दों स्यविर जयकारी । ७ ।
 नवअ ग मुर्तिकाकारी गुरु अपयदेव भय हारी ।
 जिन वज्रभ शुद्धाचारी र, वन्दों स्यविर जयकारी । ८ ।
 दादा जिनदत्त मभायी, जिन चन्द्र महा मेधावी रे ।
 सुख सागर सहज सुभायी रे, वन्दों स्यविर जयकारी । ९ ।
 मगवान परम गुरु सारे, हरि पृथ्वी विशद गुण् वारे ।
 जित कीर्ति कवीन्द्र उचारे रे, वन्दों स्यविर जयकारी । १० ।

श्री कल्पसूत्र नवम व्याख्यान समाचारी
 गहूणो । ६३ ।

तज—वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ कि तुम सु
 प्रीतहीरे लो० ।

सुनियें सामाचारी सार कि मुनि आचार कीरे लो ।
 है जो दंगकाल अनुकूल कि भव्य विचार कीरे लो । मु० १ ।
 जिन में उत्सर्ग रु अपवाद कि विधि विस्तार से रे लो ।
 भाये जिनवर जगदाधार कि निज अधिकार से रे लो । मु० २ ।

हैं जह अठ्ठावीस मकार कि गुरु समझा रहे रे लो ।
 सद्गुरु लक्षण लक्षित भाव कि जो नित हैं बहो रे लो । सु० ३ ।
 पहले दिन पचास के बाद कि पर्युषण कर रे लो ।
 वर्षाकाल अवग्रहमान कि धारें दूसरे रे ला । सु० ४ ।
 सजल नदी लघन आदेश कि तृतीयमकार में रे ला ।
 इत्यादिक हैं भाव विशेष कि मुनि व्यवहार में रे लो । सु० ५ ।
 साधु धर्म विघाति कपाय कि दूर निवारते रे लो ।
 होये यदि परमाद विवाद कि माफी माँगते रे ला । सु० ६ ।
 उपशम हो है सार अपार कि साधु धर्म में रे लो ।
 ताँ उपशम रखते नित्य कि मन-वच-कर्म में रे ला । सु० ७ ।
 साधु सुख सागर भगवान कि श्रीहरि पूज्य हैं रे लो ।
 करते सुघति कीति अपार कि दिव्य कवी-द्र हैं रे लो । सु० ८ ।

सवत्सरी पर्व को गहू लो । ६४ ।

तर्ज—बिना प्रभु पास के देणे मेरा दिल बेकछरी है ।

घड़ी धन आज की जानो, सवत्सरी पर्व पाया है ।
 हृदय से दूर माया है, अजय आनन्द छाया है । टेरे ।
 जिनेग्वर देव शासन सद्-गुरु निग्रन्थ की सेवा ।
 समुन्नत भाव से करते अजय आनन्द छाया है ॥घड़ी०१॥

निजातम शुद्ध करने को जिनेश्वर चैत्य दर्शन में ।
 विचरते दूर अथ हाते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०२॥
 सुरा सुर द्रौप नन्दीश्वर महोत्सव रस रचते हैं ।
 नया भविजन यहाँ रचते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०३॥
 जगत क सर्प जीवों से धिरोरी भाव को तज कर ।
 अभय देकर अभय होत अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०४॥
 कल्प गरु कल्पसूत्र श्री गुरु मुख मूल वारह सो ।
 विधियुक्त भाव से सुनते अजब आनन्द छाया है घड़ी०५॥
 तपो प्रति ब्रह्मचारी हा किये सर पाप खान का ।
 प्रति क्रमणादिको करते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०६॥
 उदायी चण्ड मयातन नगोवे भाव को धर कर ।
 खमात आर खमो में अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०७॥
 प्रकट सुख सिन्धु अरु भगवान्, पावन वीर शासन में ।
 हरि पूज्य मनु कृपया अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०८॥
 सुभारत राजधानी में सवत उन्नीसा अठ्ठासी ।
 करीन्द्रों क अगम ऐसा अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी ९॥



श्री नव पद गहूली । ६५ ।

वज्र—देखण दो गणगोर, भँवर माने देखण दो गणगोर० ।

एवें श्री गुरुदेव सुभागी, सुन लो महज सुभाव ।

द्वि विनायक शिव मुख दायक, श्री सिद्धचक्र प्रभाव । टिरो

दुर्लभ नर भव आरज खेतजु उत्तम कुन अवतार ।

सद्गुरु दर्शन पाये पुन्य से, धर्म करो इकार । सुभा० १ ।

दान शीघ्र तप भाव भले ये वर्म के चार प्रकार ।

तापें भी शुभ भाव बिना तिनु, होवत हैं निम्सार । सुभा० २ ।

भाव की भूमि वही मन हे जो चचल दूर्यर धार ।

वाथिरता हित निर्मल निश्चल, ध्यान सालन सार । सुभा० ३ ।

है आलवन भी बहुतेर, तां भी सर्व प्रज्ञान ।

गुरु जिनवर देव दिखाव, श्री नव पद का ध्यान । सुभा० ४ ।

अरिहत सिद्ध आचारज पाठक, साधु है निष्काम ।

सम्यग दर्शन ज्ञान चरण तप, ए नवपद गुणगम । सुभा० ५ ।

नवपद से ही सिद्ध हुआ, यह श्रीसिद्धचक्र सुनाम ।

गहन करम बन जारन कारन ज्योतिश्चक्र उदाम । सुभा० ६ ।

श्री सिद्ध चक्र प्रभाव से चक्र भववन का मिट जाय ।

श्री श्रीपाल नरेसर वसे, हरि कवीन्द्र गुण गाय । सुभा० ७ ।

निज नगर मे पधारे गुरु दर्शन समय की गहूली । ६६ ।

तजं—फेशरिया थांसु प्रीत लगी रे साचा भाव सू० ।

दर्शन को चालो गुरुसा पधारे, आज शहर में । टेरे ।
भक्ति सहित नित वन्दन करते, आनन्द हर्ष न मावे ।
विकट कोटि सकट कट जावे, दर्शन निर्मल भावे रे । दर्श० १ ।
गुरु मुख कमल निरख मन मधुकर निज दुख दूर गमावे ।
सजकर सारी मोह चपलता सहज समाधि उपावेरे । दर्श० २ ।
सघ सघन बन हर्ष बढ़ावन, गुरु, घन मेघ समाना ।
सरस बचन अमृत वर्षावें, शिव तरु सुखद निदानारे । दर्श० ३ ।
पञ्चेन्द्रिय विषय विपहारी, पच महान्तधारी ।
पचमगति गतिकारन वन्दों, पचम पद सुखकारी रे । दर्श० ४ ।
गुरु गम बिन वर वस्तु तत्व को, कोई भी नहीं पावे ।
गुरु गम दीप ज्योति पाते ही, हृदय तिमिर हठ जावेरे । दर्श० ५ ।
खरनर गणनायक गुरु सच्चे सुख सागर भगवाना ।
श्री हरिसागर पूज्य पधारे, सेवो सुगुण गुजाना रे । दर्श० ६ ।
मुनि मण्डल में सोहें गुरुवर, ज्यों तारा में चन्दा ।
पूरव पुन्य से दर्शन पाया, कीरति करे कवीदा रे । दर्श० ७ ।

अपने शहर में पधारने के लिये सद्गुरु को
प्रार्थना गहूँ लो । ६७ ।

तज — मेरे राम अयोध्या बुला लो मुझे० ।

गुरुराज विनन्ति स्वीकार करो ।

हम शहर को पावन आप करो ॥८॥

हैं आपावन आप के दरान विना हम लो यहाँ ।

सूर्य दरान के विना ही हैं कमल खिलते कहीं ॥

हमें आप सुदर्शन दान करो ॥ गुरुराज ॥ १ ॥

हम हृदय सन्तापमय हैं बोध अमृत के विना ।

होती कहीं क्या शक्ति है, शुभ मेव वर्षा के विना ॥

हमें बोध सुधा को पिलाया करो ॥ गुरुराज ॥ २ ॥

आप लो आनन्द मूर्ति सत्य सुख के घाम हैं ।

दु खमय जीवन हमारा हो रहा बेकाम है ॥

हमें आप समान बनाया करो ॥ गुरुराज ॥ ३ ॥

कर्त्तव्य है क्या क्या न जाने हम गुरु गम के विना ।

भव दु ख कैसे दूर हो सद्गुरु के पाये विना ॥

हमें वही विवरक बताया करो ॥ गुरुराज ॥ ४ ॥

आप विचरें दूर गुरुवर भव्य जाव सुबोधते ।

सत्य सधम शोधते, सब आत्रवों का रोधते ॥

शुभा महर नजर अब हम पे करो ॥ गुरुराज ॥ ५ ॥
 आप गणनायक सुलायक दिव्य गुण ह धारते ।
 भवि जीव सब साता नहे जह आप पूज्य पधारते ॥
 अब आप हमार भी पाप हरा ॥ गुरुराज ॥ ६ ॥
 अब दर्शार निच शिष्यगण को आप लेकर साथ में ।
 हम को गिराने क लिये, चीडा उठा ले हाथ में ॥
 तब दिव्य कधीन्द्र सुकीर्ति करी ॥ गुरुराज ॥ ७ ॥

गणनायक श्रीमान् हरिसागर सहगुरुवर
 देहली प्रवेश समय की गहूली । ६८ ।

तर्ज—केशरिया थामु प्रीत लागी रे माचा भाव सू० ।

वन आज की घडियों दर्शन पाये गुरुराज के ॥ ८ ॥
 श्री हरिसागर गुरु गणनायक, लायक पूज्य पधारे ।
 वन्दन चालो मङ्गल गा ला, प्रकट पुण्य हमार रे ॥
 धन आज की घडियों ॥ १ ॥
 ग्राम गगर पुर में विचरता, भविजन बोंव करन्ता ।
 पुण्य तदय देहली में दर्शन, तब गुरु जयवन्ता रे ॥
 धन आज की घडिया ॥ २ ॥

देहली सत्र सघन नदन वन, सुरतरु श्री गुरुराया ।
मकटाव सताप विनाशक, निमल समक्लि द्यारारे ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ३ ॥

सद्गुणशाली शिष्य सत्र में, शोभत ह गुरुराया ।
तारों में ज्यों चंद्र मनोहर, मुग पर वज सवाया र ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ४ ॥

कमल कु भौरा मेघ कु मोरा, छाया पथिक सँभारे ।
दिल हसन गुरु दर्गानहित त्यों, यी बिा चाह हमारे रे ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ५ ॥

आज ही आशा पुण्य मकाशा पूरण भई हमार ।
भव भय वारण शिवसुख कारण, है गुरु पूज्य हमारे रे ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ६ ॥

जिन आगा अनुरागी खरवर, स्वच्छ गच्छ में स्वामी ।
श्री सुखसागर गुरु गणनायक, भूमण्डल में नामो रे ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ७ ॥

उन पे पद्मगन में शोभ, सूरज से परतापी ।
श्री भगवान गुरु गणनायक, कीर्ति त्रिभुवन व्यापी रे ॥

धन आज की घड़ियाँ ॥ ८ ॥

उन गुरुवर के पुण्य पट्ट पर सागर सम गम्भीरा ।
श्री हरि सागर गुरु गणनायक, वर्तमान बडबीग रे ॥

धन आज की घड़ियों । ९ ।

दर्शन पाया आनन्द छाया सुनें गुम्मुख वाणी ।
काल अनादि माह जनितनिज, कुमति लता किरपाणी रे ।

धन आज की घड़ियों ॥ १० ॥

गुरुवाई तजि भजि गुरुपद को, निर्भय हो विचरेंगे ।
निगुरापन अपना सब छोकर, सद्गुरु शिष्य बनेंगे रे ॥

धन आज की घड़ियों ॥ ११ ॥

शांति मुक्ति दाता गुरुवर से, सविनय सब हम बोलें ।
चतुर्मास की आज्ञा देवें, जय जय तब हम बोलें रे ॥

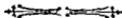
धन आज की घड़ियों ॥ १२ ॥

सद्गुरु विहार समय की गहूलो । ६६ ।

तज—चतुरगी फोजा साथ रे महत्कार राघ सेरनो सुयो
पया रे आवरो रे० ।

सुन कर बात विहार की रे, आशान्ता मुरझाय रे ।
गुरु जी सुनो आप महाँ पे विगजिये रे ॥ टर ॥
आप बिना अज्ञानकारे, घोर अन्धेरा छाय रे । शुभ० ।
शून्य हुई सारी दिशा रे चित्त अति अकुनाय रे ॥ शुभ० १ ॥

सनेही साजना रे, विरह सदा नहीं जाय रे । गुरु० ।
 सन्ताप को भेटने रे, गुरु बिन कौन सहायरे ॥ गुरु० २॥
 कृपा करते हुए रे, मास भीनिट सम जाय रे । गुरु० ।
 जो मीनिट एक माससे रे, मोहोटी अधिक लखायरे ॥ गुरु० ३ ॥
 शिखा हमको यहाँ रे, कौन कहे सुखदाय रे । गुरु० ।
 भयक सेना जिसी रे, आज दशा हो जायरे ॥ गुरु० ४ ॥
 श जीव स्वरूप को रे, जानें आप पसाय रे । गुरु० ।
 सत्सगी आत्मा रे, समकित र ग उपाय रे ॥ गुरु० ५ ॥
 ममादसे जा हुआ रे, अविनय दीजो भुनायरे । गुरु० ।
 अकारणहित करा र, विनति सुनो चित्त लायरे ॥ गुरु० ६ ॥
 सरवर सत को रे, उपकारी जग गाय रे । गुरु० ।
 धूपकार निमित्तसे रे, आप विराजो गुरुरायरे ॥ गुरु० ७ ॥
 नायक हरि पूज्यजी रे, विनति सुनो चिनायरे । गुरु० ।
 क सविनय वीनवर, स्वामी सौस नमाय रे ॥ गुरु० ८ ॥



दोहा समय का गीत । ७० ।

तज-कुण जाण मारा मा के मन की० ।

जा का डका बजाया, माहराज पराजय पाया रे । १ ॥

जिन नरभव गुरु योगा, तजकर सर दुखकर के रे । २ ॥

जा ले माउ पिताकी कर दुर्मति दूर जगदी रे । ३ ॥



सब जीव अतीव पिड्यानी, मुमति निज चित्तमें ठानी
 जिनराजसी पूजा करके, निज रूप हृदयमें धरये रे ।
 चउगणि चर भेटनरो शिवमुन्दरी से भेटनकां रे
 सयम मुग्ध लयलीना, होकर सद्गुरु प्रागीचारे ।
 निगुरापन दूर दृष्टाया, गुरु चरण कमल चिन ठाषारं
 पटकाय अथरपद दीना, निर्भय पद अपना कौनार
 पदमूल अरथादुर्मयसो गुरगमसे मुन मय उपकोरे रे
 अज्ञान अनादि निवारी, ज्ञानोदय कर अविहारी रे
 सुख सागर औपगवाना होकर हरिपूज्य मथाना रे ।
 "सम्पूर्ण कवोन्ट मुक्ती", गुणगात्रे नित्य सहेना



इति श्री कर्णर गच्छ गदाधोश्वर पूज्यपाद भान
 धाहरिसागर सद्गुरु चरण कमल चञ्चराक
 शिष्य सग मधोत्र सागर त्रिनिर्मित विविध
 विधि निषेध विधायक शुरुपदस गुण-
 माहात्म्य घगन घणित कवोत्र केलि
 गहली समह प्रथमाभाग समाप्त



